SCHOOL BOOKS

क्रिया काल
कारक निबंध
वाच्य सर्वनाम
संज्ञा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित नवीनतम् एवं संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार

सहायक पुस्तिका

6-8

हम और हमारी व्याकरण

भाग –6	... 2
भाग –7	...13
भाग –8	...28

भाग – 6

1 भाषा, व्याकरण और लिपि [Language Grammar and Script]

1. (क) (i); (ख) (i); (ग) (ii)
2. (क) संकेत; (ख) विस्तृत; (ग) शब्दों; (घ) लिपि; (ङ) लिपियाँ
3. (क) ✗; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓
4. (क) भाषा वह साधन है जिसके द्वारा विचारों तथा भावों को लिखकर या बोलकर दूसरों तक पहुँचाया जाता है तथा दूसरों के विचारों व भावों को समझा व पढ़ा जा सकता है।

   (ख) विचारों को प्रकट करने और ज्ञान में वृद्धि करने के लिए भाषा के मौखिक और लिखित रूपों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी एक के अभाव में विचारों का आदान-प्रदान अपूर्ण ही रह जाएगा।

   (ग) (i) बोलियाँ किसी भाषा का अंग होती हैं।
   (ii) भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है, किन्तु बोली का क्षेत्र सीमित।
   (iii) साहित्य-रचना में भाषा का प्रयोग किया जाता है। बोली का प्रयोग बोलचाल में होता है।
   (iv) भाषा व्याकरणसम्मत होती है, बोली नहीं।
   (v) बोली बोलने वाले अपने क्षेत्र में बोली का प्रयोग करते हैं। क्षेत्र के बाहर वे भाषा का प्रयोग करते हैं।

   (घ) भाषा की शुद्धता को बनाए रखने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के मुख्य तीन भाग हैं–
   (i) वर्ण-विचार
   (ii) शब्द-विचार
   (iii) वाक्य-विचार

   (ङ) किसी भाषा के लिखित रूप को उस भाषा की लिपि कहते हैं।

भाषा	**लिपि**
हिंदी	देवनागरी
संस्कृत	देवनागरी
उर्दू	फारसी
पंजाबी	गुरूमुखी

2 वर्ण–विचार [Orthography]

1. (क) (ii); (ख) (iii)
2. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (ii); (घ) (v); (ङ) (i)

3. **(क)** तालव्य; **(ख)** वर्णमाला; **(ग)** ऊष्म; **(घ)** विसर्ग; **(ङ)** स्वर

4. **(क)** भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। वर्ण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं– (i) स्वर (ii) व्यंजन।

   (ख) जिन वर्णों के बोलने में वायु के निकलने में कोई रुकावट पैदा नहीं होती है, उन्हें स्वर कहते हैं; जैसे– अ, आ, इ, ई आदि।

   (ग) अं तथा अः न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। इन्हें अयोगवाह कहा जाता है।

   (घ) य्, र्, ल् तथा व् अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं।

   (ङ) ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र् तथा ष् मूर्धन्य वर्ण हैं।

3 शब्द–विचार [Etymology]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (iv)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓

3. **रूढ़ शब्द-** पानी, रोटी, कपड़ा; **यौगिक शब्द-** रसोईघर, देवालय, पाठशाला, स्नानघर; **योगरूढ़ शब्द-** दशानन, पंकज, पीताम्बर

4. **(क)** शब्द; **(ख)** रूढ़; **(ग)** तत्सम; **(घ)** विदेशी

5. **(क)** वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

   (ख) रचना (बनावट) के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं– (i) मूल या रूढ़ शब्द, (ii) यौगिक शब्द, (iii) योगरूढ़ शब्द।

   (ग) रूढ़ शब्द अपने अर्थ में पूर्ण होते हैं तथा ये दूसरे शब्दों के योग से नहीं बने होते हैं जबकि योगरूढ़ शब्द दो शब्दों या शब्दांशों के योग से बने होते हैं तथा किसी अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

   (घ) वे संस्कृत शब्द जो हिन्दी में अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

   (ङ) हिन्दी के जो शब्द संस्कृत शब्दों के बिगड़ने से बने हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

4 वाक्य–विचार [Synthesis]

1. **(क)** (iv); **(ख)** (ii); **(ग)** (iii)

2.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	श्री राधे श्याम	अच्छे अधिवक्ता हैं।
(ख)	श्री राम की पत्नी सीता	पंचवटी में सो रही थी।
(ग)	रावण के छोटे भाई विभीषण ने	श्री राम को सारा भेद बता दिया।
(घ)	तुम्हारा भाई मोहन	क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी है।
(ङ)	तुम्हारे स्कूल की छात्रा रमा	अनुत्तीर्ण हो गई

3. **(क)** **उद्देश्य–** वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उद्देश्य कहलाता है, जैसे– (i) मोना बीमार है। (ii) जय खेल रहा है। इन वाक्यों में 'मोना' और 'जय' उद्देश्य हैं।

विधेय– उद्देश्य के बारे में जो कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं। उपर्युक्त वाक्यों में 'बीमार है' तथा 'खेल रहा है' विधेय हैं।

(ख) रचना के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के हैं। (i) साधारण वाक्य, (ii) मिश्रित वाक्य, (iii) संयुक्त वाक्य

(ग) समानता के आधार पर जब दो वाक्य समुच्चयबोधक से जुड़ते हैं तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं।

(घ) अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ भेद हैं–

(i) साधारणार्थक, (ii) प्रश्नार्थक, (iii) निषेधार्थक, (iv) आज्ञार्थक, (v) इच्छार्थक, (vi) सन्देहार्थक, (vii) संकेतार्थक, (viii) विस्मयार्थक

5 वर्तनी और उच्चारण [Spelling and Pronunciation]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)
2. **(क)** ✓; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✗
3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (i); **(घ)** (v); **(ङ)** (ii)
4. अधिकार 7, अनाड़ी 5, अनुशासनहीनता 15, अनेक 5, निराशाजनक 12, विवाह 6, श्याम 5, नाम 4, कान 4, घुमक्कड़ 9, दिखाना 6, दिया 4, कहाँ 5, कुटुम्ब 7
5. **(क)** उच्चरित शब्द के लेखन में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं।

(ख) वर्तनी तथा उच्चारण की शुद्धता से शुद्ध भाषा का निर्माण होता है।

(ग) मात्रा के गलत प्रयोग से अर्थ प्रभावित होता है, जिससे पाठक उसे दूसरी चीज समझ लेता है; जैसे– कुल = समस्त, किन्तु कूल = किनारा

6 संज्ञा [Noun]

1. **(क)** (iv); **(ख)** (iii); **(ग)** (ii)
2. **(क)** ✗; **(ख)** ✗; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✓
3. **(क)** (ii); **(ख)** (iv); **(ग)** (v); **(घ)** (iii); **(ङ)** (i)
4. **(क)** स्वस्थ; **(ख)** व्यक्तिवाचक; **(ग)** पढ़ना; **(घ)** मिलना; **(ङ)** भाववाचक
5. **(क)** ऐसे शब्द जो किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार या भाव का बोध कराते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

(ख) ऐसे शब्द जो किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु विशेष का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ग) जो नाम किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, पशु, पुस्तक आदि का निश्चित हो, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं जबकि जो नाम एक-जैसी अनेक वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे जातिवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं।

(घ) जो नाम किसी गुण, भाव, आकार-प्रकार आदि को बताते हैं, वे भाववाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं; जैसे– अच्छाई, बुराई, मोटापा आदि।

7 सर्वनाम [Pronoun]

1. (क) (ii); **(ख)** (i)

2. (क) (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (iv)

3. (क) उसके लिए कुछ फल दे दो।

(ख) उसने मेरी पुस्तकें बर्बाद कर दीं।

(ग) मेरी आँखें दुःख रही हैं।

(घ) तुमसे मुझे कुछ पूछना है।

4. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। इसके छः भेद होते हैं– (i) पुरुषवाचक; (ii) निश्चयवाचक; (iii) अनिश्चयवाचक; (iv) सम्बन्धवाचक; (v) प्रश्नवाचक; (vi) निजवाचक

(ख) संज्ञा किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम को कहते हैं जबकि संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ग) पुरुष तीन प्रकार के होते हैं– (i) उत्तम पुरुष (ii) मध्यम पुरुष (iii) अन्य पुरुष

(घ) कौन और क्या प्रश्नवाचक सर्वनाम से सम्बन्धित हैं।

8 विशेषण [Adjective]

1. (क) (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (ii)

2. (क) (iii); **(ख)** (v); **(ग)** (iv); **(घ)** (i); **(ङ)** (ii)

3. (क) काला; **(ख)** नीले; **(ग)** कुछ; **(घ)** सुगन्धित; **(ङ)** सफेद

4. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे– काला कुत्ता में 'काला' शब्द 'कुत्ते' की विशेषता बता रहा है। अतः 'काला' विशेषण शब्द है।

(ख) विशेषण के चार भेद हैं। ये हैं– गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक।

(ग) सर्वनामों से बने विशेषण सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं।

(घ) परिमाणवाचक विशेषण में वस्तुएँ गिनी नहीं जाती, उनका माप-तौल बताया जाता है, जबकि संख्यावाचक में माप-तौल नहीं बताया जाता, बल्कि गिनती बताई जाती है।

9 क्रिया [Verb]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (ii)
2. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (i); **(घ)** (v); **(ङ)** (ii)
3. कहा, लौटूँ, रहना, रक्षा करना, कहकर, चले गए।
4. **(क)** जिस शब्द अथवा शब्द-समूह से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

   (ख) जिस क्रिया के साथ कर्म होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। इसके दो भेद हैं।

   (ग) अकर्मक क्रिया के चार भेद हैं– (i) संयुक्त (ii) प्रेरणार्थक (iii) पूर्वकालिक (iv) नामधातु क्रिया।
   नामधातु क्रिया – संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में प्रत्यय लगाकर क्रिया बनाई जाती है तो इस प्रकार से बनी क्रियाओं को नामधातु क्रिया कहा जाता है।

   (घ) जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं।

10 क्रिया–विशेषण [Adverb]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (i)
2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✗
3. **(क)** (iv); **(ख)** (iii); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (i)
4. जैसे-वैसे, तभी, पास, जब, वहाँ, यहाँ, उतना
5. **(क)** वाक्य में क्रिया की विशेषता बताने वाला पद क्रिया-विशेषण कहलाता है।

   (ख) क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं। ये हैं – (i) स्थानवाचक (ii) कालवाचक (iii) रीतिवाचक (iv) परिमाणवाचक।

   (ग) जिन शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

11 काल [Tense]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (ii)
2. **(क)** (iii); **(ख)** (v); **(ग)** (i); **(घ)** (ii); **(ङ)** (iv)
3. **(क)** रो रहा है; **(ख)** आज आएगा; **(ग)** खाया होगा; **(घ)** लग रहा था; **(ङ)** करेंगे; **(च)** लिख लिया होगा।
4. **(क)** काल का अर्थ समय होता है।

   (ख) काल के मुख्य तीन भेद होते हैं– वर्तमानकाल, भूतकाल तथा भविष्यत्काल।

   (ग) बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं।

   (घ) आने वाले समय को भविष्यत्काल कहते हैं।

12 कारक [Case]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (iv)
2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓; **(ङ)** ✓
3. **(क)** अपादान कारक; **(ख)** करण कारक; **(ग)** करण कारक; **(घ)** अपादान कारक; **(ङ)** करण कारक
4. **(क)** में; **(ख)** पर; **(ग)** की; **(घ)** पर
5. **(क)** संज्ञा व सर्वनाम का वह रूप जिससे उसका क्रिया से सम्बन्ध प्रकट हो, उसे कारक कहते हैं।

   (ख) कारक आठ होते हैं। इनके नाम हैं- (i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक (iii) करण कारक (iv) सम्प्रदान कारक (v) अपादान कारक (vi) सम्बन्ध कारक (vii) अधिकरण कारक (viii) सम्बोधन कारक

   (ग) कारक को ही विभक्ति कहते हैं।
   अधिकरण कारक का विभक्ति चिह्न में, पर है।
   अपादान कारक का विभक्ति चिह्न 'से' (अलग होने में) लगता।

13 लिंग [Gender]

1. **(क)** पापिन; **(ख)** नातिन; **(ग)** मोरनी; **(घ)** पंडिताइन
2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗
3.

कड़वाहट – पुल्लिंग	लाली – स्त्रीलिंग	अंग्रेजी – स्त्रीलिंग
थकावट – पुल्लिंग	कोमलता – स्त्रीलिंग	फाल्गुन – पुल्लिंग
मधुर – पुल्लिंग	चिकनाहट – स्त्रीलिंग	आहट – पुल्लिंग

4. (क) संज्ञा का वह रूप जिससे उसके स्त्री, पुरुष, दोनों (स्त्री व पुरुष) तथा निर्जीव होने का बोध होता है, लिंग कहलाता है; जैसे– हाथी से पुरुष, शेरनी से स्त्री, बच्चा से दोनों (स्त्री व पुरुष) जाति के तथा पत्थर से निर्जीव होने का बोध हो रहा है।

   (ख) लिंग मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं– (i) पुल्लिंग (ii) स्त्रीलिंग
   पुल्लिंग – पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे– हाथी, शेर, चूहा, चाचा, दादा आदि।

   (ग) (i) 'अ' या 'आ' का 'इया' में बदलकर जैसे– कुत्ता - कुतिया
   (ii) अन्तिम स्वर को 'इन' में बदलकर जैसे– सुनार - सुनारिन

14 वचन [Number]

1. **(क)** ✓; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✓; **(च)** ✓; **(छ)** ✓; **(ज)** ✓; **(झ)** ✓

2. **(क)** बुढ़ियाँ; **(ख)** कन्याएँ; **(ग)** चिड़ियाँ; **(घ)** अध्यापिकाएँ; **(ङ)** बालाएँ; **(च)** जीभें; **(छ)** आँखें; **(ज)** संन्यासी; **(झ)** दादा
3. **(क)** शब्द के उस रूप को जो किसी वस्तु के एक अथवा एक से अधिक होने का बोध कराता है, वचन कहलाता है।
   (ख) हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं– (i) एकवचन (ii) बहुवचन
   (ग) (i) आ (पुल्लिंग) को ए बनाकर – गधा-गधे, मटका-मटके आदि।
   (ii) अ (स्त्रीलिंग) को एं बनाकर – रात-रातें, पुस्तक-पुस्तकें आदि।
   (iii) आ (स्त्रीलिंग) को एँ बनाकर – महिला-महिलाएँ, छात्रा-छात्राएँ आदि।
   (iv) इ-ई को इयाँ बनाकर – नदी-नदियाँ, मति-मतियाँ आदि।

15 सम्बन्धबोधक अव्यय [Post-Position Particle]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (i)
2. **(क)** स्थानवाचक, **(ख)** व्यतिरेकवाचक; **(ग)** स्थानवाचक, **(घ)** स्थानवाचक, **(ङ)** स्थानवाचक
3. **(क)** (v); **(ख)** (iii); **(ग)** (i); **(घ)** (ii); **(ङ)** (iv);
4. **(क)** के बिना; **(ख)** के द्वारा; **(ग)** में; **(घ)** अन्त तक **(ङ)** से पहले
5. **(क)** वे अविकारी शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका सम्बन्ध काल के अन्य शब्दों से दर्शाते हैं; सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं।
   (ख) सम्बन्धबोधक अव्यय के अनेक भेद होते हैं। इनमें से कुछ हैं– उद्देश्यवाचक, विरोधवाचक, कारणवाचक, साधनवाचक आदि।

16 समुच्चयबोधक अव्यय [Conjunction]

1. **(क)** संयोजक - और, तथा; **(ख)** विभाजक - परन्तु, क्योंकि; **(ग)** विकल्पसूचक - या, न कि
2. **(क)** दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को मिलाने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अथवा योजक अव्यय कहलाते हैं।
   (ख) संयोजक शब्दों को जोड़ने के काम आते हैं।
   (ग) कुछ विकल्पसूचक अव्यय हैं– या अथवा न कि आदि।

17 विस्मयादिबोधक (सम्बोधक) अव्यय [Interjection]

1. **(क)** अबे! **(ख)** हाय रे! **(ग)** अरे! **(घ)** रे!
2. **(क)** आश्चर्यसूचक; **(ख)** शोकसूचक; **(ग)** हर्षसूचक; **(घ)** घृणासूचक

3. (क) हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि मनोभावों तथा पुकारने अथवा सम्बोधित करने वाले अविकारी शब्द विस्मयादिबोधक अथवा सम्बोधक अव्यय कहलाते हैं।

(ख) विस्मयादिबोधक अव्यय की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) इनके द्वारा भावों की तीव्रता प्रकट की जाती है।
(ii) इनके बाद सम्बोधन चिह्न (!) लगाया जाता है।
(iii) इनका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों से बिलकुल नहीं होता है।
(iv) ये प्रायः वाक्य के शुरू में आते हैं।

18 सन्धि [Joining or Combination]

1.

	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम		सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
(क)	धर्म + आत्मा	दीर्घ सन्धि	(ख)	कवि + इन्द्र	दीर्घ सन्धि
(ग)	राज्य + इन्द्र	गुण सन्धि	(घ)	तथा + एव	वृद्धि सन्धि

2. (क) वर्णों की अति समीपता के कारण एक या दोनों वर्णों में जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

(ख) जब मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अन्त में स्वर होता है और दूसरे शब्द के प्रारम्भ में भी स्वर होता है, ऐसे मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर सन्धि कहते हैं।

(ग) स्वर सन्धि पाँच प्रकार की होती है– (i) दीर्घ सन्धि (ii) गुण सन्धि (iii) वृद्धि सन्धि (iv) यण् सन्धि (v)अयादि सन्धि

19 पर्यायवाची शब्द [Synonyms]

1. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (iv)

2.

(क)	आकाश	–	आसमान	गगन	(ख)	गणेश	–	गणपति	विनायक
(ग)	लक्ष्मी	–	श्री	इन्दिरा	(घ)	सरस्वती	–	शारदा	गिरा
(ङ)	अग्नि	–	अनल	आग	(च)	अतिथि	–	मेहमान	सम्बन्धी
(छ)	धरती	–	धरा	वसुंधरा	(ज)	इच्छा	–	अभिलाषा	कामना

3. (क) समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थक शब्द कहते हैं।

(ख) समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्याचवाची शब्द और उलटे अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं।

20 विपरीतार्थक शब्द [Antonyms]

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (ii)

2.

स्वस्थ-अछूत	✗	एक-दो	✗	एकता-अनेकता	✓	सभ्य-अशुभ	✗
उत्तम-अधम	✓	उचित-अनुत्तीर्ण	✗	अर्थ-आदर	✗	उदार-अनुदार	✓

3. **(क)** जो शब्द आपस में विपरीत (उलटा) अर्थ प्रकट करें, वे विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं, जैसे– ऊँचा-नीचा, काला-गोरा आदि।

(ख) जो शब्द आपस में विपरीत अर्थ प्रकट करें, वे विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं, समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

21 अनेकार्थक शब्द [Words With Various Meanings]

1. **(क)** (i); **(ख)** (ii)
2. क, घ, ड़, ज
3. **(क)** वे शब्द जिनके अनेक अर्थ हों, अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं। वे शब्द जिनके अर्थ समान हों, समानार्थक शब्द कहलाते हैं।

(ख) वे शब्द जिनके अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

22 समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द [Homonyms]

1. **(क)** (i); **(ख)** (iii)
2. **(क)** भीतर, भेद; **(ख)** पुराना, वस्त्र; **(ग)** निर्भय, दोनों; **(घ)** सेना, कड़वा

23 अनेक शब्दों (वाक्यांश) के लिए एक शब्द [One Word Substitution]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (ii)
2. **(क)** अकर्मण्य; **(ख)** अगणित; **(ग)** सर्वज्ञ; **(घ)** अल्पभाषी; **(ङ)** अदृश्य; **(च)** अनुनासिक; **(छ)** नवागंतुक; **(ज)** अनुकरणीय

24 समानार्थक प्रतीत होने वाले शब्द [Words Apparently Similar in Meaning]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (iii)
2. **(क)** जीवन का बीता हुआ भाग; पूर्ण जीवनकाल; **(ख)** किसी अवसर पर सम्मिलित होने की प्रार्थना भोजन आदि के अवसर पर बुलाना; **(ग)** किसी छिपी हुई वस्तु को ढूँढ़ना, किसी नई वस्तु का निर्माण करना; **(घ)** परिवार से सम्बन्ध रखने वाला निवास स्थान, रहने का कोई भी स्थान; **(ङ)** जो हथियार फेंककर चलाया जाए, जो हथियार हाथ में पकड़कर चलाया जाए।; **(च)** धूप, दीप आदि से देवता की औपचारिक सेवा, बिना किसी सामग्री के भक्तिपूर्ण विनयीभाव से ईश्वर की सेवा।

25 उपसर्ग [Prefix]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iii)

2. **(क)** शब्दों तथा धातुओं के पूर्व जो शब्दांश लगाए जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

(ख) हिन्दी में प्रचलित उपसर्गों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

(i) संस्कृत से आए तत्सम उपसर्ग; (ii) तद्भव उपसर्ग; (iii) अरबी-फारसी से आए उपसर्ग

(ग) नापाक, लावारिस, सरताज, बदनाम, कमजोर

26 प्रत्यय [Suffix]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii);

2. **(क)** (iii); **(ख)** (v); **(ग)** (i); **(घ)** (ii); **(ङ)** (iv)

3. **(क)** वाला, ठेलेवाला, गुब्बारेवाला; **(ख)** आऊ, लड़ाऊ, जड़ाऊ; **(ग)** आहट, कड़वाहट, गड़गड़ाहट; **(घ)** वान, ज्ञानवान, विद्वान

4. **(क)** जो शब्दांश शब्दों के बाद जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(ख) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं- (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय

(ग) उपसर्ग शब्दों से पहले जुड़ते हैं जबकि प्रत्यय शब्दों के बाद में जुड़ते हैं।

(घ) जो प्रत्यय धातुओं के साथ लगकर संज्ञा, विशेषण और अव्यय शब्द बनाते हैं, वे कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं जबकि जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय के बाद लगकर नए शब्द बनाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

27 विराम-चिह्न [Punctuation]

1. राम ने कहा, ''रावण तो मर गया। लंका का राज्य अब कौन सँभालेगा? लक्ष्मण! क्या यह राज्य तुम सँभाल सकोगे?''

लक्ष्मण बोले, ''आपकी आज्ञा शिरोधार्य कर मुझे हर्ष ही होगा, पर विभीषण जैसे उत्तराधिकारी के होते क्या यह उचित है?''

2. सीता बोली, ''हाय! रामजी ने मुझ पर भी आरोप लगा दिया। आश्चर्य! लक्ष्मण! उन्हें कह दो, मैं अग्नि परीक्षा अवश्य दूँगी।''

3. **(क)** वाक्य में कहीं थोड़ी देर तथा कहीं अधिक देर रुकने के लिए, कहीं प्रश्न, तो कहीं आश्चर्य प्रकट करने के लिए विराम-चिह्नों की उपयोगिता है।

(ख) वाक्य के पूर्ण हो जाने पर पूर्ण-विराम का प्रयोग किया जाता है।

(ग) बहुत थोड़ा रुकने के लिए अल्प-विराम तथा अल्प-विराम से अधिक तथा पूर्ण-विराम से कम समय रुकने के लिए अर्द्धविराम-चिह्न लगाया जाता है।

28 अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप [Correction of the Incorrect Sentences]

1. **(क)** लिंग; **(ख)** वचन; **(ग)** सर्वनाम; **(घ)** क्रिया
2. **(क)** उसकी माता जी विद्यालय में आएँगी।
   (ख) आप फिर यहाँ कब आएँगे?
   (ग) तुम किसके साथ खेलना चाहते हो?
   (घ) मुझे किसी को कुछ नहीं बताना।
   (ङ) उसे हमारे साथ भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

29 पत्र–लेखन [Letter-Writing]

1. सामाजिक पत्रों के आठ भाग होते हैं–
   (क) स्थान, (ख) दिनांक व दिन, (ग) सम्बोधन, (घ) अभिवादन, (ङ) विषय, (च) शिष्टाचार के शब्द, (छ) हस्ताक्षर, (ज) प्राप्तकर्ता का पता
2. स्वयं करें।
3. स्वयं करें।

30 अनुच्छेद–लेखन [Paragraph-Writing]

छात्र स्वयं करें।

31 निबन्ध–लेखन [Essay-Writing]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)
2. **(क)** तीन; **(ख)** तीन; **(ग)** मध्य; **(घ)** निचोड़
3. **(क)** किसी एक विषय पर अपने विचारों को शृंखलाबद्ध ढ़ंग से लिखित रूप से प्रस्तुत करना निबन्ध कहलाता है। निबन्ध एक पृष्ठ का भी हो सकता है और एक पूरी पुस्तक का भी। मध्यम कक्षाओं में 250 शब्दों से लेकर 300 शब्दों तक ही निबन्ध लिखना पर्याप्त होता है।
   (ख) छात्र स्वयं करें।

भाग – 7

1 भाषा, व्याकरण और लिपि [Language, Grammar and Script]

1. **(क)** (iv); **(ख)** (iii); **(ग)** (iii)

2. **(क)** ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✓; **(घ)** ✓

3. तेलुगु, उड़िया, कोंकणी, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, संस्कृत, संथाली, नेपाली, तमिल।

4. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (i)

5. **(क)** जिस साधन से हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचारों को सुनकर या पढ़कर समझ लेते हैं, वह साधन ही भाषा है।

(ख) पंजाबी, गुजराती, हिन्दी, उड़िया, बांग्ला, कश्मीरी।

(ग) (i) भाषा का अपना लिखित साहित्य तथा व्याकरण होता है, जबकि बोली केवल उच्चारण तक सीमित होती है।

(ii) भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि बोली एक सीमित क्षेत्र में ही प्रयोग में लाई जाती है।

(घ) मौखिक ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों को लिपि कहा जाता है।

2 वर्ण–विचार [Phonology]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (ii)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✗; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✓

3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (i)

4. **(क)** वर्ण की तीन विशेषताएँ हैं–

(i) वर्ण-भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

(ii) इसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं।

(iii) इनके मेल से शब्द बनते हैं।

(ख) जिन वर्णों को बोलने में वायु के निकलने में कोई रुकावट पैदा नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर को बोलने में मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावट पैदा नहीं होती है, जबकि व्यंजनों को बोलने में मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावट पैदा होती है।

(ग) कोई स्वर व व्यंजन जब परस्पर संयोजित होते हैं तो उनमें स्वरों का रूप परिवर्तित हो जाता है स्वरों के इस परिवर्तित रूप को मात्रा कहते हैं, जैसे– क + आ + ल + आ = काला

(घ) उच्चारण के आधार पर व्यंजनों के निम्नलिखित भेद होते हैं– कण्ठ, दन्त-ओष्ठ, तालू, कण्ठ-तालू, मूर्धा, कण्ठ-ओष्ठ, दन्त, नासिका, ओष्ठ।

(ङ) वर्ण को मुख के जिस स्थान से बोला जाता है, वह उच्चारण स्थान कहलाता है; जैसे– कण्ठ, तालू, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ आदि।

3 शब्द–विचार [Etymology]

1. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (ii)
2. (क) ✗; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓
3. (क) (iii); (ख) (i); (ग) (iv); (घ) (ii);
4. (क) वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है; जैसे– पुस्तक, फल, सड़क आदि।

   (ख) वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है। जब शब्द का प्रयोग वाक्य में व्याकरण के नियमों में बँधकर होता है, तब वह पद कहलाता है।

   (ग) जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हों और उनका विशिष्ट अर्थ हो, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

   (घ) जो शब्द वाक्य में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अपना रूप बदल लेते हैं, वे विकारी शब्द कहलाते हैं और जो शब्द अपना रूप नहीं बदलते, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं।

4 वाक्य–विचार [Synthesis]

1. (क) (iii); (ख) (iii); (ग) (ii)
2. (क) (v); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (ii); (ङ) (iii)
3. (क) ✓; (ख) ✓; (ग) ✗; (घ) ✗; (ङ) ✗
4. (क) मोहन पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकें छाँट रहा है।

   (ख) मेरे पिताजी आज शाम को दिल्ली जायेंगे।

   (ग) मेरी छोटी बहन पुस्तक पढ़ रही है।

   (घ) रमेश के बड़े भाई का लड़का परीक्षा में पास हो गया है।
5. (क) वाक्य में जिसके बारे में कुछ बताया या कहा जाता है, उद्देश्य कहलाता है।

   (ख) वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कहा जाता है, विधेय कहलाता है।

   (ग) जिस वाक्य में एक कर्ता तथा एक क्रिया होती है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं।

   (घ) मिश्रित वाक्यों में एक मुख्य उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित वाक्य होते हैं जो समुच्चयबोधक से जुड़े होते हैं।

   (ङ) अर्थ की दृष्टि से वाक्य के मुख्यतः आठ भेद होते हैं।

(च) जिन वाक्यों में क्रिया के विधान (सम्पन्न होने) के सामान्य रूप में होने का बोध होता है, उन्हें विधानार्थक वाक्य कहते हैं; जैसे– कुसुम खाना खाएगी।

(छ) जिन वाक्यों में क्रिया के विधान (सम्पन्न होने) का निषेध किया जाता है, उन्हें निषेधार्थक वाक्य कहते हैं।

(ज) जिन वाक्यों से आज्ञा देने का बोध होता है, उन्हें आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं, जबकि जिन वाक्यों में किसी प्रकार की इच्छा, आकांक्षा, आशीर्वाद या शाप (दुआ अथवा बद्‌दुआ) निहित होती है, इन वाक्यों को इच्छार्थक वाक्य कहते हैं।

5 वर्तनी और उच्चारण [Spelling and Pronunciation]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (iv)

2. **(क)** बीसवीं शताब्दी में विज्ञान का बोलबाला था।

(ख) वह प्रातः सात बजे परीक्षा देने जाएगा।

(ग) हिन्दुस्तान में औद्योगिक प्रगति हो रही है।

(घ) प्रह्लाद ईश्वर का भगत था।

(ङ) उसका स्वास्थ्य पहले से अच्छा है।

3. **(क)** ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓

4. **(क)** (iv); **(ख)** (i); **(ग)** (ii); **(घ)** (iii)

5. **(क)** अपनी बात को दूसरों तक सही-सही अर्थों में पहुँचाने के लिए शुद्‌ध लिखना आवश्यक है।

(ख) वर्ण भाषा के लिखित तथा मौखिक दोनों रूपों के प्रतीक हैं जबकि लिपि-चिह्‌न केवल लिखित भाषा के प्रतीक हैं। ये वर्ण जिस रूप में लिखे जाते हैं, उसे लिपि कहते हैं। इस प्रकार लिपि-चिह्‌न वर्ण के अन्तर्गत आते हैं।

(ग) (i) जिन व्यंजनों में खड़ी पाई 'ा' होती है, उन्हें जब दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ा जाता है तब यह खड़ी पाई हटा दी जाती है; जैसे– (ख) ख्याल

(ii) ट से पहले प्रायः– 'ष' का प्रयोग होता है; जैसे– कष्ट, निष्ठा। 'ऋ' के बाद भी प्रायः 'ष' होता है; जैसे– कृषि, वृषभ आदि।

(घ) अशुद्‌ध लिखना वर्तनी सम्बन्धी ज्ञान के न होने का प्रतीक है।

6 संज्ञा [Noun]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (i)

2. **(क)** ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓; **(ङ)** ✓

3. **(क)** कमाई – क्रिया से; **(ख)** लिखावट – क्रिया से; **(ग)** मित्रता – संज्ञा से; **(घ)** मधुरता – विशेषण से; **(ङ)** स्वत्व – सर्वनाम।

4. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (i)

5. **(क)** किसी भी नाम को संज्ञा कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी वस्तु, प्राणी, स्थान, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ख) जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति-विशेष, स्थान-विशेष या वस्तु-विशेष का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– राम, महेश, यमुना, रामायण आदि।

(ग) जिस संज्ञा शब्द से किसी प्राणी, वस्तु इत्यादि की पूरी जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– मनुष्य, गाय, नदी आदि।

जिस संज्ञा शब्द से किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण, धर्म, भाव, व्यापार और अवस्था का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– सुन्दरता, बचपन, पढ़ाई आदि।

(घ) क्रिया से बनी भाववाचक संज्ञाएँ-

धोना-धुलाई; रोकना-रुकावट; पीटना-पिटाई; खोदना-खुदाई आदि।

7

सर्वनाम [Pronoun]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (i)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓; **(ङ)** ✓

3. **(क)** पुस्तक किसने चुराई है? **(ख)** तुम्हारा नाम मुझे मालूम नहीं है। **(ग)** वे हमें कहकर गए थे। **(घ)** यह किसका भाई है? **(ङ)** उसने पुस्तक पढ़ी।

4. **(क)** संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– यह, वह, तुम, हम, कुछ, कब आदि।

(ख) संज्ञा किसी वस्तु, स्थान, प्राणी अथवा भाव का नाम होता है जबकि संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ग) सर्वनाम के छः भेद हैं–

(i) पुरुषवाचक (ii) निश्चयवाचक (iii) अनिश्चयवाचक (iv) सम्बन्धवाचक (v) प्रश्नवाचक (vi) निजवाचक

(घ) जो शब्द एक सर्वनाम का दूसरे सर्वनाम के साथ सम्बन्ध का बोध कराते हैं, वे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– (i) जितना करोगे उतना पाओगे (ii) जैसी करनी वैसी भरनी।

(ङ) जिन सर्वनाम शब्दों से प्रश्न का बोध होता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जो सर्वनाम शब्द कर्ता के स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

8 विशेषण [Adjective]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (i)

2.

(क) इतिहास	–	ऐतिहासिक	**(ख)** नीति	–	नैतिक
(ग) संस्कृति	–	सांस्कृतिक	**(घ)** कुल	–	कुलीन
(ङ) जटा	–	जटिल	**(च)** ईर्ष्या	–	ईर्ष्यालु
(छ) पठ्	–	पठित	**(ज)** बुद्धि	–	बुद्धिमान
(झ) जल	–	जलीय	**(ञ)** रुचि	–	रुचिकर
(ट) आत्मा	–	आत्मिक	**(ठ)** पिपासा	–	पिपासित

3. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗

4. **(क)** विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं; जैसे– राम बुद्धिमान लड़का है। इसमें 'बुद्धिमान' शब्द लड़के की विशेषता बता रहा है। अतः यह विशेषण शब्द है।

(ख) विशेषण चार प्रकार के होते हैं – (i) गुणवाचक – डरपोक, काला, आदि। (ii) परिमाणवाचक – थोड़ी, दो मीटर आदि। (iii) संख्यावाचक – दस, चार सौ आदि। (iv) संकेतवाचक – यह, वह आदि।

(ग) विशेषणों के गुण-दोषों में न्यूनाधिक का पता करना तुलना कहलाता है। उसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं– (i) मूलावस्था (ii) उत्तरावस्था (iii) उत्तमावस्था; जैसे–

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
महान	महत्तर	महत्तम

(घ) विशेषण रचना के दो परिवर्तन इस प्रकार हैं– (i) संज्ञा से विशेषण बनाना – शिव-शैव, वर्ष-वार्षिक आदि। (ii) सर्वनाम से विशेषण बनाना – यह-ऐसा, मैं-मेरा आदि।

9 क्रिया [Verb]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (i)

2. **(क)** (iii); **(ख)** (v); **(ग)** (iv); **(घ)** (i); **(ङ)** (ii)

3. **(क)** तुम्हारे विद्यालय में कैसा वातावरण है? **(ख)** वह आपका श्रद्धालु है। **(ग)** श्री आलोक कुमार का भाषण अच्छा था। **(घ)** सुमन ने उसे गालियाँ दीं।

4. **(क)** किसी कार्य के होने या करने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं; जैसे– राम पुस्तक, पढ़ रहा था। इसमें 'पढ़ रहा था' शब्द कार्य के होने या करने का बोध करा रहा है। यह क्रिया शब्द है।

(ख) क्रिया के दो मुख्य भेद होते हैं– (i) सकर्मक (ii) अकर्मक; जैसे– सकर्मक – मोहन ने पुस्तक पढ़ी।, अशोक बाज़ार गया है। अकर्मक- मोहन पढ़ा।, मदारी आया।

(ग) संरचना की दृष्टि से क्रिया के चार भेद होते हैं–

(i) संयुक्त क्रिया – पढ़ने लगी, भर गया आदि।

(ii) नामधातु क्रिया – फटकारना, अलसाना आदि।

(iii) प्रेरणार्थक क्रिया – बुलाना, पढ़ाना आदि।

(iv) कृदन्त क्रिया – बुलाकर, पढ़ाकर आदि।

(घ) (i) यदि मूल क्रिया के प्रथम वर्ण में ए, ओ हो तो 'ए' का 'इ' और 'ओ' का 'उ' हो जाता है; जैसे– बोलना, बुलाना, बुलवाना।

(ii) मूल धातु के अन्त में 'आ' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक और 'वा' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती है; जैसे– दौड़ना, दौड़ाना, दौड़वाना।

10 वाच्य [Voice]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (iii)।

2. **(क)** क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि वाक्य में क्रिया द्वारा सम्पादित विधान का विषय कर्ता कर्म है अथवा भाव है वह वाच्य कहलाता है।

(ख) वाच्य के तीन प्रकार हैं– (i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य।

(ग) (i) कर्ता के साथ 'से', 'द्वारा' अथवा 'के द्वारा' जोड़ना चाहिए।

(ii) कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित करना चाहिए।

(iii) उस परिवर्तित क्रिया के साथ काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार 'जाना' क्रिया अर्थात् 'जा' धातु का रूप जोड़ना चाहिए।

(घ) (i) इसमें क्रिया अन्य पुरुष और एकवचन में रखनी चाहिए।

(ii) कर्ता में करण कारक की विभक्ति का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) इनमें आवश्यकतानुसार निषेधसूचक 'नहीं' का प्रयोग करना चाहिए।

11 अविकारी शब्द [Indeclinable]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (ii); **(ग)** (iii)।

2. **(क)** जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, वे अविकारी शब्द या अव्यय कहलाते हैं; जैसे– आज, साथ, और, भी आदि।

(ख) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। इनके चार भेद होते हैं– (i) रीतिवाचक (ii) स्थानवाचक (iii) कालवाचक (iv) परिमाणवाचक।

(ग) जो शब्द क्रिया के काल या समय का बोध कराते हैं; उन्हें कालवाचक क्रिया-विशेषण कहा जाता है; जैसे– कल, कब, दोपहर, सदैव आदि।

(घ) जो शब्द क्रिया के स्थान का बोध कराते हैं; उन्हें स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं जबकि जो शब्द क्रिया के परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे–

(i) यहीं बैठकर काम करो। (स्थानवाचक क्रिया-विशेषण)

(ii) अधिक उपजाओ। (परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण)

(ङ) जो अव्यय पदों, पदबन्धों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं– **(क)** समानाधिकरण समुच्चयबोधक **(ख)** व्याधिकरण समुच्चयबोधक

(च) जो अव्यय दो या अधिक समान पदों, पदबन्धों तथा उपवाक्यों को जोड़ता है, समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाता है जबकि जो अव्यय किसी वाक्य के एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं; उन्हें व्याधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

12 कारक [Case]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (i)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✗

3. **(क)** (iv); **(ख)** (v); **(ग)** (i); **(घ)** (iii); **(ङ)** (ii)

4. **(क)** सरला गीत गाती है। **(ख)** कौआ डाली पर बैठा है। **(ग)** मोहन! तुम्हें हमारे साथ खेलना है। **(घ)** वह स्कूल आया है। **(ङ)** मैं खाना खाऊँगा। **(च)** तुम्हें क्या खाना है। **(छ)** हमें पुस्तक पढ़नी है।

5. **(क)** संज्ञा और सर्वनाम का वह रूप जिससे उसका सम्बन्ध वाक्य में अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, कारक कहलाता है।

(ख) कारक के छः भेद होते हैं– (i) कर्ता, (ii) कर्म, (iii) करण, (iv) सम्प्रदान, (v) अपादान, (vi) अधिकरण।

(ग) कारकों के विभक्ति चिह्न इस प्रकार हैं– कर्ता -ने; कर्म -को; करण-से, के द्वारा; सम्प्रदान -को, के लिए; अपादान- से (अलग होना); अधिकरण - में, पर।

(घ) जिसकी सहायता से कोई कार्य सम्पन्न हो, वह संज्ञा या सर्वनाम पद करण कारक होता है; जबकि जिससे अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे–

अन्ना ने चाकू से फल काटा। (करण कारक)

गंगा हिमालय से निकलती है। (अपादान कारक)

(ङ) जिस संज्ञा या सर्वनाम पदों से क्रिया के आधार का बोध हो, वे अधिकरण कारक होते हैं; जैसे– मोहन कमरे में है।

13 लिंग [Gender]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)
2. **(क)** चित्र; **(ख)** सीता; **(ग)** बन्दर
3. **(क)** लिंग का अर्थ होता है– चिह्न। चिह्न का अभिप्राय पहचान से है; अर्थात् शब्द के जिस रूप से यह मालूम पड़े कि यह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, व्याकरण में उसे लिंग कहते हैं।
   (ख) जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष होने का बोध होता है, उन्हें पुल्लिग कहते हैं, जैसे– राजा, छात्र, लड़का आदि। जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री होने का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे– रानी, छात्रा, लड़की आदि।

14 वचन [Number]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i) ; **(ग)** (ii)
2. **(क)** एकवचन; **(ख)** बहुवचन; **(ग)** बहुवचन; **(घ)** एकवचन
3. **(क)** शब्द के जिस रूप से उसके द्वारा प्रकट की गई वस्तु का संख्या में एक या अधिक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।
   (ख) संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन तथा संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।
   (ग) (i) ह्रस्व अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में 'अ' का बहुवचन में 'ऐं' हो जाता है; जैसे– जीभ-जीभें, बात-बातें आदि।
   (ii) दीर्घ आकारान्त (पुल्लिग) शब्दों के बहुवचन में 'आ' का 'ए' हो जाता है, जैसे– चूहा-चूहे, घड़ा-घड़े आदि।

15 पदबन्ध [Phrase]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (ii)
2. **(क)** ✓; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✓
3. **(क)** क्रिया पदबन्ध; **(ख)** क्रिया-विशेषण पदबन्ध; **(ग)** विशेषण पदबन्ध; **(घ)** विशेषण पदबन्ध; **(ङ)** क्रिया पदबन्ध
4. **(क)** कई पदों के योग से बने हुए वाक्यांश को, जो एक ही पद का काम करता है, उसे पदबन्ध कहते हैं।
   (ख) पदबन्ध पाँच प्रकार के होते हैं– (i) संज्ञा-पदबन्ध (ii) सर्वनाम पदबन्ध (iii) विशेषण-पदबन्ध (iv) क्रिया-पदबन्ध (v) क्रिया-विशेषण पदबन्ध
   (ग) अव्यय-पदबन्ध नहीं होते हैं, क्योंकि अव्यय को लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

16 उपसर्ग [Prefix]

1. (क) (ii); **(ख)** (iii)

2. (क) (iv); **(ख)** (i); **(ग)** (ii); **(घ)** (iii)

3. (क) जो शब्दांश किसी शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं या उसके अर्थ में विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

(ख) हिन्दी में चार प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है– (i) संस्कृत के उपसर्ग (ii) हिन्दी के उपसर्ग (iii) उर्दू के उपसर्ग (iv) उपसर्ग की भाँति प्रयोग में आने वाले संस्कृत अव्यय

(ग) संस्कृत के उपसर्ग – वि – विशेष, अलग, उलटा – वियोग विभाग
अति – अधिक – अत्यन्त, अत्यधिक
उर्दू के उपसर्ग – बे – रहित – बेचारा, बेइमान
बद – बुरा – बदनाम, बदकिस्मत

17 प्रत्यय [Suffix]

1. (क) (ii); **(ख)** (iii)

2. (क) ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✗

3. (क) (v); **(ख)** (i); **(ग)** (ii); **(घ)** (iii); **(ङ)** (iv)

4. (क) इच्छ्, आ; **(ख)** काम, आई; **(ग)** लकड़ी, हारा; **(घ)** लोटा, इया

5. (क) जो शब्दांश शब्दों के अन्त में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(ख) जो प्रत्यय क्रिया को धातुओं के अन्त में लगाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं जबकि धातु के अतिरिक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों में जुड़कर नवीन शब्दों की रचना करने वाले शब्दों को तद्धित प्रत्यय कहा जाता है।

(ग) (i) आना – रोजाना, सालाना
(ii) ईन – नमकीन
(iii) दानी – चूहेदानी, मच्छरदानी
(iv) पोश – मेजपोश, तख्तपोश

18 सन्धि [Joining or Combination]

1. (क) (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (iii)

2. (क) ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗

3. **(क)** (v); **(ख)** (iv); **(ग)** (i); **(घ)** (ii); **(ङ)** (iii)

4. **(क)** मुनीन्द्र; दीर्घ सन्धि; **(ख)** स्वाधीन; दीर्घ सन्धि;
(ग) दिग्गज; व्यंजन सन्धि; **(घ)** गणेश; गुण सन्धि;

5. **(क)** दो समीपवर्ती वर्णों के पारस्परिक मेल से जो विकार (परिवर्तन) पैदा होता है, उसे सन्धि कहते हैं; जैसे– दया + आनन्द = दयानन्द; वि + आप्त = व्याप्त

(ख) सन्धि के तीन भेद होते हैं – (i) स्वर सन्धि (ii) व्यंजन सन्धि (iii) विसर्ग सन्धि
स्वर सन्धि – दो स्वरों के मेल से जो विकार पैदा होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

(ग) यदि अ, आ के आगे इ, ई आए और 'ए', 'उ', 'ऊ' आए, तो ओ तथा ऋ आए, तो दोनों के स्थान पर अर् हो जाता है। इसी को गुण सन्धि कहते हैं।

(घ) इ, ई से परे इ, ई को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आए, तो इ, ई के स्थान पर 'य्' हो जाता है। उ, ऊ के बाद उ, ऊ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आए, तो उ, ऊ के स्थान पर व् हो जाता है। ऋ, ॠ से परे ऋ, ॠ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आए, तो ऋ, ॠ के स्थान पर 'र्' हो जाता है। इसे यण् सन्धि कहते हैं; जैसे– यदि + अपि = यद्यपि; सु + आगत = स्वागत।

19 समास (Compound)

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii)

2.
(क)	दस हैं आनन जिसके	बहुव्रीहि
(ख)	दही और बड़ा	द्वन्द्व समास
(ग)	नीला है कण्ठ जिसका	बहुव्रीहि
(घ)	नहीं है भाव जिसका	बहुव्रीहि
(ङ)	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव
(च)	पाप और पुण्य	द्वन्द्व

3. **(क)** शब्द रचना प्रक्रिया अविकारी शब्दों, पदबन्धों, उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि तथा समास आदि के द्वारा पूरी होती है।

(ख) वे शब्दांश जो किसी शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–
श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु; गुण + वान = गुणवान।

(ग) दो या अधिक पदों से मिलकर बने हुए नवीन सार्थक पद को समास कहते हैं। दो शब्दों के परस्पर मिलने की दो स्थितियाँ हो सकती हैं– (i) सन्धि द्वारा (ii) समास द्वारा।

(घ) जिस समास में उत्तर पद की प्रधानता होती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसके छः भेद होते हैं– (i) कर्म तत्पुरुष (ii) करण तत्पुरुष (iii) सम्प्रदान तत्पुरुष (iv) अपादान तत्पुरुष (v) सम्बन्ध (vi) अधिकरण।

(ङ) जिसमें उपमान-उपमेय तथा विशेषण-विशेष्य का समास हो अथवा पहला शब्द दूसरे शब्द का वर्णन करे तथा दोनों में कर्ता कारक की ही विभक्ति हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे– परमेश्वर = परम् है जो ईश्वर।

20 पर्यायवाची शब्द [Synonyms]

1. **(क)** देवराज, सुरेन्द्र; **(ख)** चतुर, अवयव; **(ग)** अमीय, सोम; **(घ)** कगार, मयूख।
2. **(क)** शिक्षक – अध्यापक, आचार्य
   (ख) सिंह – केसरी, वनराज
   (ग) मछली – मत्स्य, मीन
   (घ) हाथी – गज, दन्ती
   (ङ) आनन्द – उल्लास, आमोद
   (च) उपवन – उद्यान, वाटिका
   (छ) किरण – रश्मि, पुंज
   (ज) गंगा – देवनदी, सुरसरि
   (झ) जल – पानी, नीर
   (ञ) तालाब – सरोवर, जलाशय

21 विपरीतार्थक [Antonyms]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iv)
2. **(क)** संक्षेप; **(ख)** समर्थन, विपक्ष

22 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द [One Word Substitution]

1. **(क)** निर्भय; **(ख)** अजातशत्रु।
2. **(क)** दत्तक; **(ख)** क्षणिक; **(ग)** निरुद्देश्य; **(घ)** रात्रिचर; **(ङ)** अगम्य; **(च)** धर्मनिष्ठ; **(छ)** निर्दय; **(ज)** निराधार

23 समोच्चारित शब्द [Pair of Similar Words, Distinguished]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (i)

24 समानार्थक प्रतीत होने वाले शब्द [Words Apparently Similar in Meaning]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iii)
2. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iv); **(घ)** (i)
3. **(क)** आयु; **(ख)** छाया; **(ग)** अस्त्रों; **(घ)** अत्याचार

25 अनेकार्थक शब्द [Polyonyms]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iii)

2. **(क)** ज्ञान, रथ, सर्प, आँख, पहिया; **(ख)** गाय, कामधेनु; **(ग)** प्राण, जल; **(घ)** सम्मान, आदर; **(ङ)** सखा, सूर्य, प्रिय, सहयोगी; **(च)** सोना, गेहूँ, धतूरा

3. **(क)** (iv); **(ख)** (v); **(ग)** (ii); **(घ)** (iii); **(ङ)** (i)

4. **(क)** एक ही शब्द के अनेक अर्थ रखने वाले शब्द अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे– (i) घट – देह, मन, घड़ा (ii) कनक – सोना, गेहूँ, धतूरा।

(ख) भात

(ग) श्रेष्ठ, आगे, सिरा, पहले, मुख्य

26 शब्द–युग्म [Pairs of Words]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii);

2. **(क)** शब्दों का वह जोड़ा जो शब्दों के अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए अथवा उनके अर्थ पर बल देने के लिए हमारी भाषा में बन गया है शब्द-युग्म कहलाता है।

(ख) शब्द-युग्म से हमारी भाषा सुन्दर तथा आकर्षक बन जाती है।

(ग) शब्द-युग्म निम्नलिखित छः प्रकार के होते हैं– (i) एक ही शब्द की पुनरुक्ति से निर्मित शब्द-युग्म (ii) सजातीय या समानार्थक शब्दों से निर्मित शब्द-युग्म (iii) विलोम शब्दों से निर्मित शब्द-युग्म (iv) सार्थक और निरर्थक शब्दों से निर्मित शब्द-युग्म (v) निरर्थक शब्दों से निर्मित शब्द-युग्म (vi) परसर्गों के प्रयोग तथा शब्द की पुनरुक्ति से निर्मित शब्द-युग्म।

27 मुहावरे और लोकोक्तियाँ [Idioms and Proverbs]

1. **(क)** लाल-पीला होना; **(ख)** कलई खुलना; **(ग)** टका-सा जवाब देना; **(घ)** तलवे चाटना; **(ङ)** नौ दो ग्यारह होना

2. **(क)** सुरेश के काम न करने के कारण वह घर के लोगों की आँखों का काँटा है।

(ख) हरि मेरे खिलाफ अध्यापक के कान भरता रहता है।

(ग) हरीश अच्छी आदतों के कारण घर के लोगों के गले का हार है।

(घ) पुच्छ में आतंकवादियों को कुत्ते की मौत मारा गया।

(ङ) रिश्वत से अफसरों का मुँह बन्द हो जाता है।

3. **(क)** अधजल गगरी छलकत जाए; **(ख)** आम के आम गुठलियों के दाम; **(ग)** घर का भेदी लंका ढाए; **(घ)** दूध का दूध पानी का पानी; **(ङ)** ऊँची दुकान फीका पकवान।

4. **(क)** (iv); **(ख)** (v); **(ग)** (ii); **(घ)** (iii); **(ङ)** (i)

5. **(क)** मुहावरे लोक-मानस की चिरसंचित अनुभूतियाँ हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सजीवता आ जाती है और एक विलक्षण अर्थ ध्वनित होने लगता है।

(ख) लोकोक्ति श्रोता के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है। ये प्रायः लोक अनुभव पर आधारित होती है। इसी कारण ये लोकप्रिय होती हैं।

(ग) 'मुहावरा' वाक्यांश होता है और इसका स्वतन्त्र रूप प्रयोग नहीं किया जा सकता है जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जिसका स्वतन्त्र रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

28 विराम-चिह्न [Punctuation]

1. **(क)** कोष्ठक का प्रयोग किसी शब्द का अर्थ बताने, किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के बारे में बताने तथा क्रमसूचक अंकों या अक्षरों के साथ किया जाता है।

(ख) योजक चिह्न सामासिक पदों या पुनरुक्त और युग्म-शब्दों के मध्य लगाया जाता है।

(ग) निर्देशक (डैश) का प्रयोग किसी उद्धरण के या कथन के पहले अल्पविराम के स्थान पर तथा किन्हीं वस्तुओं, कार्यों आदि का ब्यौरा देने में किया जाता है।

(घ) अवतरण या उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं – 1. इकहरा अवतरण चिह्न, 2. दुहरा अवतरण चिह्न। अवतरण या उद्धरण चिह्न का प्रयोग कवि या लेखक का उपनाम, पाठों का शीर्षक, पुस्तक, समाचार-पत्र आदि का नाम लिखने,सूक्तियों या कहावतों को स्पष्ट करने के लिए काव्य पंक्तियों, पदबन्धों या उपवाक्यों में किया जाता है।

इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग मुख्यतः लेखक या वक्ता के कथन को यथावत् उद्धृत करने में होता है।

2. कप्तान ने कहा, "मुझे भय है कि इस भयंकर तूफान से जहाज़ शीघ्र ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। इसलिए तुरन्त नाव समुद्र में उतारो, जिससे हम डूबने से बच सके।"

29 अशुद्ध वाक्यों का संशोधन [Correction of Incorrect Sentences]

1. **(क)** प्रसाद; **(ख)** ऋषि; **(ग)** भाषा; **(घ)** आशीर्वाद; **(ङ)** अध्ययन

2. **(क)** तुम रात बहुत सोए। **(ख)** क्या यह सम्भव है? **(ग)** घायल आदमी के प्राण निकल गए। **(घ)** मोहन फूट-फूट कर रो रहा था। **(ङ)** उसके अच्छे दिन बीत गए। **(च)** मेरे पिताजी कल आएँगे। **(छ)** जयशंकर प्रसाद महाकवि थे। **(ज)** आज हमें विद्यालय जाना है।

30 अपठित गद्यांश [Unseen Passage]

1. **(क)** पांडवों ने अज्ञात रूप से मत्स्य देश के राजा विराट के यहाँ रहने का निश्चय किया।

(ख) धर्मराज ने विराट के यहाँ संन्यासी का वेश धर कंकु नाम रखकर रहने का निश्चय किया।

(ग) बृहन्नला ने विराट के यहाँ अंतःपुर की स्त्रियों को संगीत और नृत्य की शिक्षा देने का काम सम्भाला।

(घ) भीम बल्लभ नाम से विराट के यहाँ रसोइया बना।

(ङ) द्रौपदी ने मालिन नाम से सैरंध्री का रूप धर विराट की पत्नी की परिचारिका बनना स्वीकार किया।

(च) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'अज्ञातकाल में पांडव' हो सकता है।

2. (क) नगर जीवन बड़ा सुखमय जीवन है।

(ख) नगर में यातायात के लिए ताँगे आदि हैं।

(ग) नगर में मनोरंजन के लिए सिनेमा, थियेटर आदि हैं।

(घ) नागरिकों को टेलीफोन, रेडियो, नल का पानी, डाकघर आदि की सुविधाएँ हैं जो ग्रामवासियों को नहीं मिल पाती हैं।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'नगरीय जीवन' हो सकता है।

31 डायरी (दैनंदिनी) लेखन [Diary Writing]

छात्र स्वयं करें।

32 पत्र–लेखन [Letter-Writing]

1. (क) (iv); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)

2. (क) ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓

3. छात्र स्वयं करें।

33 अनुच्छेद–लेखन [Paragraph-Writing]

1. (क) किसी विषय को संक्षेप में लिखना अनुच्छेद लेखन कहलाता है।

(ख) अनुच्छेद लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i) अनुच्छेद में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।

(ii) भाषा सरल और सुगम तथा वाक्य छोटे व प्रभावशाली होने चाहिए।

(iii) विचारों को लिखते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान रखें।

(iv) शब्दों की चयन सीमा का विशेष ध्यान रखें।

(v) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से संबंधित होने चाहिए।

2. छात्र स्वयं करे।

34

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)

2. **(क)** (v); **(ख)** (iii); **(ग)** (iv); **(घ)** (ii); **(ङ)** (i)

3. **(क)** कला; **(ख)** वर्णनात्मक; **(ग)** विचारप्रधान; **(घ)** भावप्रधान; **(ङ)** उत्कृष्ट

4. **(क)** निबन्ध में गद्य-रचना देखने को मिलती है।

(ख) निबन्ध तीन प्रकार के होते हैं।

(i) वर्णनात्मक या विवरणात्मक; जैसे– माघ के मेले का वर्णन, यात्रा का वर्णन।

(ii) विचार-प्रधान; जैसे– भारतीय जल-पोत, समुद्र, सहकारिता।

(iii) भाव प्रधान; जैसे– क्रोध, प्रेम।

(ग) (i) विषय सम्बन्धी जानकारी विभिन्न स्रोतों से प्राप्त कर ली जाए।

(ii) जानकारी प्राप्त करने के लिए उस विषय पर लिखे गए अन्य निबन्ध पढ़कर उपयोगी सामग्री नोट कर ली जाए।

(iii) विद्वान व्यक्तियों और अपने अध्यापक के साथ उस विषय पर वार्तालाप किया जाए तथा विषय-सामग्री का संकलन और चयन किया जाए।

(iv) विषय के सम्बन्ध में अपने निजी अनुभवों का भी उल्लेख किया जाए।

5. छात्र स्वयं करें।

भाग – 8

1 भाषा, लिपि और व्याकरण [Language, Script and Grammar]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (i)
2. **(क)** ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✓
3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (i); **(घ)** (ii)
4. **(क)** प्रचार-प्रसार; **(ख)** ध्वनियाँ; **(ग)** ब्राह्मी; **(घ)** उर्दू, अरबी; **(ङ)** वर्णों
5. **(क)** **भाषा–**विचारों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया 'भाषा' कहलाती है। इसके दो प्रकार हैं – (i) लिखित भाषा; (ii) मौखिक अथवा कथित भाषा।

   (ख) भाषा के छः रूप होते हैं– (i) मातृभाषा (ii) प्रादेशिक भाषा (iii) राष्ट्रभाषा (iv) अन्तर्राष्ट्रीय भाषा (v) राजभाषा (vi) सम्पर्क भाषा।

   (ग) किसी भाषा को शुद्ध रूप में प्रयोग करने की विधि बताने वाली नियमावली को व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के तीन विभाग हैं।

   (i) वर्ण-विचार, (ii) शब्द-विचार, (iii) वाक्य-विचार

2 वर्ण–विचार [Orthology]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)
2. **(क)** ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓
3. **(क)** (ii); **(ख)** (iv); **(ग)** (i); **(घ)** (iii)
4. **(क)** वर्ण; **(ख)** वर्णमाला; **(ग)** स्वर
5. **(क)** **अक्षर या वर्ण –** भाषा की सबसे छोटी ध्वनि-इकाई को अक्षर या वर्ण कहते हैं।

   (ख) **स्वर –** जिन वर्णों का उच्चारण अपने आप होता है अर्थात् जिसके बोलने में अन्य वर्णों की सहायता नहीं ली जाती है, उन्हें स्वर कहते हैं।

   (ग) जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुँह से निकलने वाली वायु के मार्ग में कोई रूकावट पैदा होती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

   (घ) वर्णों के परस्पर संयोग को वर्ण-संयोग कहते हैं। यह दो प्रकार से होता है। (i) व्यंजन और स्वर का संयोग (ii) व्यंजन और व्यंजन का संयोग।

   (ङ) जब किसी व्यंजन को बिना स्वर के लिखा जाता है, तो उसे हलन्त कहते हैं।

3 शब्द-विचार [Etymology]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✗

3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (i)

4. **(क)** कुम्हार; **(ख)** कौआ; **(ग)** दूध; **(घ)** नाक; **(ङ)** सुनार; **(च)** आँख; **(छ)** कपूत; **(ज)** ओठ

5. **(क)** **शब्द –** दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

(ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं- (क) रूढ़ शब्द (ख) यौगिक शब्द (ग) योगरूढ़ शब्द

(ग) **योगरूढ़ शब्द –** जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हों तथा जिनका अर्थ निश्चित होता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं।

(घ) जो शब्द न तो संस्कृत भाषा से और न किसी अन्य भाषा से लिए गए हैं, परन्तु हिन्दी में आवश्यकता के अनुसार बना लिए गए हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं तथा वे शब्द जो हिन्दी में अन्य देशों की भाषाओं से आ गए हैं विदेशज शब्द कहलाते हैं।

(ङ) दो भिन्न भाषाओं के शब्दों से मिलकर जो नया शब्द बनता है, उसे संकर शब्द कहा जाता है; जैसे– रेलगाड़ी – रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिन्दी)

(च) प्रयोग की दृष्टि से शब्द को दो भागों में बाँटा गया है।
(i) सामान्य शब्द (ii) तकनीकी शब्द
व्याकरण की दृष्टि से शब्द को दो भागों में बाँटा गया है।
(i) अविकारी शब्द (ii) विकारी शब्द

4 वाक्य-विचार [Synthesis]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (iii)

2. **(क)** (i) ओह मेरा सिर फटा जा रहा है। (ii) ओह, मेरे पैर में दर्द है।

(ख) (i) उसने खाना खा लिया होगा। (ii) उसने स्नान कर लिया होगा।

(ग) (i) यह मेरी इच्छा है कि तुम सफल हो। (ii) मेरी इच्छा है कि तुम अच्छा खेलो।

(घ) (i) मैं खा चुका। (ii) मैं सो चुका ।

(ङ) (i) मैंने खाना नहीं खाया। (ii) मैंने पानी नहीं पीया है।

(च) (i) तुम खाना खा लो। (ii) तुम जाकर आराम कर लो।

(छ) (i) क्या तुम सो रहे हो? (ii) क्या तुम खेल रहे हो?

3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (i)

4. **(क)** तीन; **(ख)** शुरू; **(ग)** क्रिया; **(घ)** आज्ञावाचक; **(ङ)** अन्वय

5\. (क) **उद्देश्य और विधेय –** वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसको उद्देश्य कहते हैं, तथा वाक्य में जिसके द्वारा उद्देश्य की क्रिया या विशेषता बताई जाती है, उसको विधेय कहते हैं।

उदाहरण – प्रेरणा खेलती है। इस वाक्य में 'प्रेरणा' उद्देश्य है तथा 'खेलती है' विधेय है।

(ख) **वाक्य क्रम –** किसी वाक्य में सार्थक शब्दों को उचित स्थान पर रखने को वाक्य क्रम कहते हैं।

उदाहरण – हरिकृष्ण ने भोजन किया। इस वाक्य में पहले 'कर्ता' फिर 'कर्म' और बाद में 'क्रिया' को रखा गया है।

(ग) **वाक्य –** शब्दों के उस सार्थक क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं, जिसके द्वारा कहने या लिखने का पूर्णभाव स्पष्ट होता है। **उदाहरण –** पंकज एक अच्छा मित्र है।

(घ) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं– (i) सरल वाक्य; (ii) मिश्रित वाक्य तथा; (iii) संयुक्त वाक्य

(i) **सरल वाक्य –** जिस वाक्य में एक उद्देश्य एवं एक विधेय हो, तो उसे सरल वाक्य कहते हैं। **उदाहरण –** बिजली चमकती है।

(ii) **मिश्रित वाक्य –** जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अधीन दूसरा अंग वाक्य को अर्थात् जिसमें उद्देश्य या विधेय एक से अधिक हो, तो उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं।

उदाहरण – राहुल और नितिन खाना खा रहे हैं।

(iii) **संयुक्त वाक्य –** जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य हों, तो उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। **उदाहरण –** मैं भोजन करके लेटा ही था कि सुरेन्द्र बुलाने आ गया।

(ङ) **मिश्रित वाक्य –** जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अधीन दूसरा अंग वाक्य को अर्थात् जिसमें उद्देश्य या विधेय एक से अधिक हों, तो उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं?

उदाहरण – मोहन और नितिन खेल रहे हैं।

5 वाक्य-विश्लेषण (Disintegration of Sentences)

1\. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (i)

2\.

(क)	सूर्य अस्त हुआ।	प्रधान उपवाक्य
	निशा ने अपने काले केश बिखरा दिए।	समानाधिकरण
	और	योजक
(ख)	मुझे जो कुछ खरीदना था।	विशेषण योजक उपवाक्य
	मैंने खरीद लिया।	प्रधान उपवाक्य
(ग)	मैंने एक सुन्दर स्त्री देखी।	प्रधान उपवाक्य
	बड़ा सुरीला गाती थी।	विशेषण उपवाक्य
	जो	योजक
(घ)	आगरा का ताजमहल	उद्देश्य
	बहुत सुन्दर और दर्शनीय है।	विधेय

(ङ)	पुस्तक	विशेषण उपवाक्य
	एक कठिन प्रश्न था।	प्रधान उपवाक्य
	में	योजक
(च)	वह बाजार गया।	प्रधान उपवाक्य
	वहाँ उसने फल खरीदे।	समानाधिकरण
	और	योजक

3. (क) **वाक्य-विश्लेषण –** किसी वाक्य के अंग-प्रत्यंग (कर्ता, कर्ता-विस्तार, कर्म, कर्म-विस्तार, कारक, क्रिया-विश्लेषण, क्रिया, योजक आदि) को अलग-अलग करके उनके आपसी सम्बन्धों को प्रकट करना ही 'वाक्य-विश्लेषण' कहलाता है।

(ख) सरल वाक्य का विश्लेषण करते समय उसे 1. उद्देश्य तथा 2. विधेय दो भागों में विभाजित किया जाता है।

(ग) विधेय के अन्तर्गत निम्नलिखित पद आते हैं–
(i) कर्म, (ii) कर्म का विस्तार (विशेषण पद या पदबन्ध), (iii) क्रिया-पद या क्रिया-पदबन्ध, (iv) क्रिया-विशेषण पद या पदबन्ध, (v) पूरक पद या पदबन्ध, (vi) अन्य कारकीय पद तथा पदबन्ध।

(घ) **संयुक्त वाक्य का विश्लेषण –** संयुक्त वाक्य में दो उपवाक्य योजक-चिह्नों से जुड़े होते हैं। सबसे पहले संयुक्त वाक्यों के योजक-चिह्न हटाकर उन्हें साधारण वाक्यों में बदल लेते हैं। फिर इन साधारण वाक्यों का विश्लेषण कर लेते हैं। इन साधारण वाक्यों में एक मुख्य तथा दूसरा उससे जुड़ा हुआ वाक्य रहता है। इनमें मुख्य वाक्य प्रधान उपवाक्य तथा दूसरा वाक्य समानाधिकरण उपवाक्य कहलाता है।

(ङ) **मिश्रित वाक्य का विश्लेषण –** मिश्रित वाक्यों में प्रधान उपवाक्य और गौण उपवाक्य योजक द्वारा सुगठित होते हैं। उनके विश्लेषण के लिए सबसे पहले प्रधान उपवाक्य की पहचान कर लेते हैं। इसके बाद गौण उपवाक्यों की पहचान करके उनके कार्य का उल्लेख करते हैं। योजकों को अलग करके साधारण वाक्यों की भाँति उनका विश्लेषण कर लेते हैं।

6 वाक्य–संश्लेषण (Synthesis of Sentences)

1. (क) (i); (ख) (i); (ग) (iii)
2. (क) वे ईश्वर में आस्था रखते हैं क्योंकि वे सब आस्तिक हैं।
(ख) पटरी से हट जाओ अन्यथा तुम्हें गाड़ी कुचल देगी।
(ग) वर्षा में छत गिर गई क्योंकि छत बहुत कमजोर थी।
(घ) दशरथ के पुत्र राम अयोध्या के राजा थे।
(ङ) मेरे पिताजी तुम्हारे पिताजी के मित्र हैं।
(च) मैंने बाजार में सुना है कि गोपाल की दुकान जल गई।
3. (क) तुलसी ने परोपकार के समान दूसरा धर्म नहीं बताया है।

(ख) प्रधानमन्त्री परमाणु विस्फोट करने वाले स्थान पर गए।
(ग) मेरी माताजी मथुरा, काशी और कन्याकुमारी घूम आई हैं।
(घ) वैज्ञानिक रात-दिन एक करने पर भी रक्त का विकल्प नहीं ढूँढ़ पा रहे हैं।
(ङ) मीरा रस्सी को साँप समझकर डर गई।
(च) शोभना को शास्त्रीय नृत्य करते मैंने देखा।

4. (क) (iv); (ख) (v); (ग) (i); (घ) (ii); (ङ) (iii)

5. (क) दो या दो से अधिक वाक्यों को जोड़कर उनसे एक सरल, मिश्रित अथवा संयुक्त वाक्य बनाने की प्रक्रिया को वाक्य-संश्लेषण कहा जाता है। इसमें नए बने वाक्य का वही अर्थ होता है, जो अर्थ उसके मूल वाक्य का होता है।

(ख) वाक्य-संश्लेषण से तीन प्रकार के वाक्य बनते हैं– (i) सरल वाक्य (ii) मिश्रित वाक्य (iii) संयुक्त वाक्य।

(ग) वाक्य-संश्लेषण द्वारा सरल वाक्य निम्नलिखित से बनाए जाते हैं।
(i) सामान्य संज्ञा पदबन्ध द्वारा (ii) पूर्वकालिक क्रिया पदबन्ध के द्वारा (iii) क्रिया-विशेषण के द्वारा (iv) विशेषण पदबन्ध के द्वारा (v) संयोजक अव्यय द्वारा।

(घ) सरल वाक्यों को संश्लेषित करके निम्नलिखित प्रकार के मिश्रित वाक्य बनाए जा सकते हैं–
(i) संज्ञा आश्रित उपवाक्य से युक्त मिश्रित वाक्य (ii) विशेषण आश्रित उपवाक्य से युक्त मिश्रित वाक्य (iii) क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य से युक्त मिश्रित वाक्य।

(ङ) सरल वाक्यों से विरोधवाचक संयोजक अव्यय से युक्त संयुक्त वाक्य बनाने के लिए सरल वाक्यों को किन्तु, परन्तु, लेकिन आदि विरोधवाचक संयोजक अव्ययों के द्वारा संश्लेषित किया जाता है, जैसे–

(i) **सरल वाक्य** – मैं वहाँ पहुँच गया। तुम नहीं आए।
वाक्य संश्लेषण – मैं वहाँ पहुँच गया, किन्तु तुम नहीं आए।

(ii) **सरल वाक्य** – राक्षसों ने हनुमान को बहुत रोका, वह उनसे रोके न जा सके।
वाक्य-संश्लेषण – राक्षसों ने हनुमान को बहुत रोका, परन्तु वह उनसे रोके न जा सके।

7 वाक्य–रचनान्तरण [Transformation of Sentences]

1. (क) (iii); (ख) (i); (ग) (ii)

2. (क) (iv); (ख) (iii); (ग) (ii); (घ) (v); (ङ) (i)

3. (क) बच्चा रो भी नहीं सका। (ख) रावण राम द्वारा मारा गया। (ग) वाल्मीकि ने रामायण लिखी। (घ) किशोर द्वारा दिल्ली जाया जाएगा। (ङ) बच्चे गेंद खेलेंगे।

4. (क) शशि अब सो रही होगी। (ख) रोहित धनाढ्य हो। (ग) तुम बुलाओ, तो मैं आ जाऊँगा। (घ) मंजू, लोकगीत गाओ। (ङ) तुम दोनों इस कार्य को नहीं कर सकते हो।

5. (क) जब दोपहर का समय होगा तब विश्राम करेंगे। (ख) मैं फिल्म देखकर सो गया। (ग) यह

कठिन प्रश्न है, इसीलिए इसे कोई हल नहीं कर सका। **(घ)** तुलसी जब बालक थे तब अनाथ हो गए थे।

6. (क) एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलना वाक्य-रचनान्तरण कहलाता है।

(ख) वाक्य-रचनान्तरण तीन प्रकार से हो सकता है–(i) वाच्य परिवर्तन द्वारा वाक्य रचनान्तरण; (ii) रचना में परिवर्तन द्वारा वाक्य रचनान्तरण; (iii) अर्थ में परिवर्तन द्वारा वाक्य रचनान्तरण।

(ग) किसी विस्तृत (बड़े) वाक्य को संकोचन (सिकोड़ना) के द्वारा संकुचित (छोटा) बनाया जा सकता है। इसे वाक्य-संकोचन कहते हैं; जैसे–

वाक्य – कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, किन्तु परम ज्ञानी थे।

वाक्य-संकोचन – अनपढ़ कबीर परम ज्ञानी थे।

(घ) वाक्य-विस्तार से हम किसी संकुचित (छोटे) वाक्य को विस्तृत (बड़े) वाक्य बना सकते हैं; जैसे–

वाक्य – विश्वासघात अक्षम्य अपराध है।

वाक्य-विस्तार – विश्वासघात ऐसा अपराध है, जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता।

8 संज्ञा [Noun]

1. (क) संज्ञा, **(ख)** क्रिया, **(ग)** विशेषण, **(घ)** विशेषण

2. (क) ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗

3. (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा; **(ख)** व्यक्तिवाचक; **(ग)** नाम; **(घ)** भाववाचक संज्ञा

4. (क) (ii); **(ख)** (v); **(ग)** (iv); **(घ)** (iii); **(ङ)** (i)

5. (क) **संज्ञा –** किसी वस्तु, प्राणी अथवा स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ख) **जातिवाचक संज्ञा–** जब कोई संज्ञा शब्द एक ही प्रकार के सभी प्राणियों, वस्तुओं व स्थानों का बोध कराता है, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ग) जब व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने लगते हैं, तब उनकी संज्ञा जातिवाचक हो जाती है।

(घ) **जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग–** जब किसी जातिवाचक शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति विशेष के लिए किया जाने लगता है, तब वह व्यक्तिवाचक संज्ञा होती है; जैसे– शास्त्रीजी देश के द्वितीय प्रधानमन्त्री बने।
यहाँ पर 'शास्त्रीजी' शब्द जातिवाचक होते हुए व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है; क्योंकि यह 'लालबहादुर शास्त्री' के लिए प्रयुक्त हुआ है।

9 सर्वनाम [Pronoun]

1. (क) (ii); **(ख)** (iii)

2. (क) ✓; **(ख)** ✗; **(ग)** ✗; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✗

3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (i)

4. **(क)** **सर्वनाम –** जो शब्द किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं; सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) **पुरुषवाचक सर्वनाम –** जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले और जिसके बारे में बात की जाए उसके लिए होता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इन सर्वनामों का प्रयोग तीन प्रकार के व्यक्तियों के लिए होता है; अतः इस आधार पर इस सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–

(i) **उत्तम पुरुष –** जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं; जैसे– मैं, हम, मुझे, हमारा इत्यादि। उदाहरण – ''मैं विद्यालय जाऊँगा।''

(ii) **मध्यम पुरुष –** जिस सर्वनाम का प्रयोग सुनने वालों के लिए किया जाता है, उसे मध्यम पुरुष कहते हैं; जैसे– तुम, तू, तुम्हें, तुम्हारा आदि। उदाहरण – ''तुम कहाँ रहते हो?''

(iii) **अन्य पुरुष –** जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अपने तथा सुनने वाले के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के लिए करता है, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। उदाहरण – ''वह विद्यालय नहीं गया।'' इस वाक्य में 'वह' शब्द अन्य पुरुष है।

(ग) **निश्चयवाचक सर्वनाम –** जिस सर्वनाम से किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वे जा रहे हैं। वह आ रहा है।

(घ) जिन सर्वनामों का वाक्य के दूसरे सर्वनामों से सम्बन्ध सूचित हो, उन्हें सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे– जैसा करेगा वैसा भरेगा।
जो बोएगा सो काटेगा। यहाँ जैसा.....वैसा, जो.....सो आपस में सम्बन्ध सूचित करते हैं।

10 विशेषण [Adjective]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (i); **(ग)** (iv)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓; **(ङ)** ✗

3. **(क)** काला; **(ख)** विशाल; **(ग)** लाल; **(घ)** काली; **(ङ)** दो; **(च)** कुछ।

4. **(क)** (v); **(ख)** (i); **(ग)** (ii); **(घ)** (iii); **(ङ)** (iv)

5. **(क)** **विशेषण –** जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं, विशेषण कहलाते हैं।
उदाहरण – (i) लाल सेब (i) सुन्दर स्त्री
यहाँ 'लाल' शब्द सेब (संज्ञा) तथा 'सुन्दर' स्त्री शब्द (संज्ञा) की विशेषता बता रहे हैं। ये विशेषण शब्द हैं।

(ख) विशेषण सात प्रकार के होते हैं–

(i) गुणवाचक विशेषण – संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, अवगुण, दशा, स्थिति, रंग, आकार, दिशा, समय तथा स्थान का बोध कराने वाले शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण – संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की मात्रा अथवा परिमाण (नाप-तौल) का बोध कराने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

(iii) संख्यावाचक विशेषण – संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(iv) संकेतवाचक विशेषण – संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की ओर संकेत करने वाले शब्दों को संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

(v) प्रश्नवाचक विशेषण – संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रश्न करने वाले शब्दों को प्रश्नवाचक विशेषण कहते हैं।

(vi) विभागवाचक विशेषण – संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की पृथकता का ज्ञान कराने वाले शब्दों को विभागवाचक विशेषण कहते हैं।

(vii) व्यक्तिवाचक विशेषण – किसी देश अथवा राष्ट्र के नाम से बनने वाले विशेषण शब्दों को व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं।

(ग) परिमाणवाचक विशेषण के उदाहरण हैं–

(i) तुम्हें कितनी जगह चाहिए? (ii) इतनी मिठाई कौन लायेगा? (iii) ज्यादा शक्कर खाना हानिकारक है।

उक्त वाक्यों में 'कितनी', 'इतनी', 'ज्यादा', शब्दों से विशेषण की नाप मालूम पड़ती है। अतः इन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

(घ) **परिमाणवाचक विशेषण –** संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की मात्रा अथवा परिमाण (माप-तौल) का बोध कराने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण – (i) इतनी मिठाई कौन खाएगा (ii) तुम्हें कितनी जगह चाहिए

इन वाक्यों में 'इतनी', 'कितनी' शब्दों से विशेषण की नाप मालूम पड़ती है।

संख्यावाचक विशेषण – संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण – (i) सुरेश मुझसे दुगुना भोजन करता है (ii) चार डाकू पुलिस ने पकड़ लिए।

इन वाक्यों में दुगुना, चार शब्द संख्यावाचक विशेषण हैं

(ङ) विशेषण सात प्रकार के होते हैं–

(i) गुणवाचक विशेषण; (ii) परिमाणवाचक विशेषण, (iii) संख्यावाचक विशेषण, (iv) संकेतवाचक विशेषण, (v) प्रश्नवाचक विशेषण, (vi) विभागवाचक विशेषण, (vii) व्यक्तिवाचक विशेषण

11 क्रिया [Verb]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)

2. **(क)** ✓; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗; **(ङ)** ✗; **(च)** ✓; **(छ)** ✗; **(ज)** ✓

3. **(क)** खा लिया, सकर्मक; **(ख)** अपनी ओर खींचना, सकर्मक; **(ग)** अकर्मक; **(घ)** अकर्मक; **(ङ)** जीवित नहीं रहेगा, सकर्मक

4. **(क)** **सकर्मक क्रिया –** जिस क्रिया के साथ उसका कर्म हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण – राम रोटी खा रहा है।

इस वाक्य में 'खा रहा' क्रिया है। इसके साथ उसका कर्म 'रोटी' भी लगा हुआ है। खाने का फल रोटी पर पड़ रहा है। अतः यह सकर्मक क्रिया है।

(ख) अकर्मक क्रिया – जिन क्रियाओं का फल कर्ता पर पड़े, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण – मोना नाच रही है। इस वाक्य में क्रिया 'नाच रही है' का फल कर्ता पर ही पड़ता है। इसमें कोई कर्म नहीं है, अतः यह अकर्मक क्रिया है।

(ग) जिस क्रिया के साथ उसका कर्म हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं तथा जिस क्रिया के साथ कर्म न हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

(i) हरीश क्रिकेट खेल रहा है। (सकर्मक क्रिया)

(ii) छोटा बच्चा रो रहा है। (अकर्मक क्रिया)

(घ) द्विकर्मक क्रिया – कुछ क्रियाओं में दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण – मैं कृष्णकान्त को व्याकरण पढ़ाता हूँ।

इस वाक्य में 'पढ़ना' क्रिया के दो कर्म हैं– 'कृष्णकान्त को' और 'व्याकरण।' यहाँ 'पढ़ना' क्रिया द्विकर्मक क्रिया है।

(ङ) पूर्वकालिक क्रिया – जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त करते ही, दूसरी क्रिया को प्रारम्भ कर देता है, तो पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण – उसने नहाकर भोजन किया है।

यहाँ कर्ता एक क्रिया (नहाकर) को समाप्त करते ही, इसकी दूसरी क्रिया (भोजन किया है।) प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार पहली क्रिया नहाकर पूर्वकालिक क्रिया है।

12 काल (Tense)

1. (क) (ii); **(ख)** (i); **(ग)** (iii)

2. (क) ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✓; **(ङ)** ✗; **(च)** ✗; **(छ)** ✓; **(ज)** ✓

3. (क) आसन्न भूतकाल; **(ख)** संदिग्ध भूतकाल; **(ग)** आसन्न भूतकाल; **(घ)** अपूर्ण वर्तमान काल; **(ङ)** संदिग्ध वर्तमान काल

4. (क) हेतुहेतुमद् भूतकाल **(ख)** पूर्ण भूतकाल; **(ग)** सामान्य भविष्यत् काल; **(घ)** सामान्य भूतकाल; **(ङ)** अपूर्ण वर्तमान काल

5. (क) जिस रूप से क्रिया के होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं– (i) वर्तमान काल, (ii) भूतकाल, (iii) भविष्यत् काल।

(ख) वर्तमान काल – जब क्रिया के किसी काम का होना चल रहे समय में पाया जाता है, तो उसे वर्तमान काल कहते हैं। **उदाहरण –** (i) मैं भोजन कर रहा हूँ। (ii) नीरज खेलता है।

(ग) वर्तमान काल 4 प्रकार का होता है–

(i) **सामान्य वर्तमान काल –** क्रिया के जिस रूप में उसका सामान्य रूप से वर्तमान काल में होने का बोध हो, तो उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। **उदाहरण –** मैं पढ़ता हूँ।

(ii) **पूर्ण वर्तमान काल –** क्रिया के जिस रूप में यह बोध हो कि वह वर्तमान काल में पूर्ण हो गयी है, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। **उदाहरण –** वह गया है।

(iii) **संदिग्ध वर्तमान काल –** क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में होने का अनुमान लगाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। **उदाहरण –** प्रेम पानी पीता होगा।

(iv) **अपूर्ण वर्तमान काल –** क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में आरम्भ होकर अभी जारी है, तो उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। **उदाहरण –** सैनिक सीमा पर पहरा दे रहे हैं।

(घ) **भूतकाल –** क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में सम्पन्न होने या क्रियान्वित होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।
उदाहरण – (i) हरीश वहाँ भोजन कर रहा था। (ii) मैं कानपुर गया था।

(ङ) **भविष्यत् काल –** क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में होने का बोध हो, उसको भविष्यत् काल कहते हैं।
उदाहरण – (i) सुनीता पुस्तक पढ़ेगी। (ii) नरेश कल घर जाएगा।

13 क्रिया–विशेषण [Adverb]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)

2. **(क)** अधिक; **(ख)** यहाँ; **(ग)** धीरे-धीरे; **(घ)** ज्यादा।

3. **(क)** **क्रिया-विशेषण –** जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

(ख) क्रिया-विशेषण के मुख्यतः चार भेद होते हैं; इनके नाम हैं– (i) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, (ii) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, (iii) कालवाचक क्रिया-विशेषण, (iv) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण।

(ग) **विशेषण –** जो शब्द किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं, विशेषण कहलाते हैं।
उदाहरण – लाल सेब, सुन्दर स्त्री। यहाँ 'लाल' शब्द सेब (संज्ञा) तथा 'सुन्दर' शब्द स्त्री (संज्ञा) की विशेषता बता रहे हैं। ये विशेषण शब्द हैं।
क्रिया-विशेषण – जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।
उदाहरण – मोहन धीरे-धीरे लिखता है। इस वाक्य में 'धीरे-धीरे' शब्द (लिखने की क्रिया) विशेषता बता रही है। यह क्रिया-विशेषण है।

14 सम्बन्धबोधक अव्यय [Post-Position Particles]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii)

2. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (i); **(घ)** (ii)

3. **(क)** के साथ; **(ख)** के खिलाफ; **(ग)** की ओर; **(घ)** अलावा; **(ङ)** के लिए

4. (क) सम्बन्धबोधक अव्यय वे पद होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य में आए अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध बताते हैं।

(ख) प्रयोग की दृष्टि से सम्बन्धबोधक अव्यय निम्नलिखित प्रकार के होते हैं– विषयसूचक, कालवाचक, स्थानवाचक, तुलनावाचक, विनिमयवाचक, समानतासूचक, विरोधवाचक, व्यक्तिवाचक, संग्रहवाचक, साधनवाचक, दिशावाचक, कारणसूचक, सम्बन्धसूचक, उद्देश्यसूचक आदि।

(ग) क्रिया-विशेषण क्रिया तथा विशेषण की विशेषता बताते हैं जबकि सम्बन्धबोधक संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य में आए अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध बताते हैं।

15 समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction Particles)

1. (क) (ii); **(ख)** (iii)।

2. (क) समुच्चयबोधक वाक्य में दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्य खण्डों को जोड़ने का काम करते हैं।

(ख) संयोजक के दो उदाहरण – और, तथा। विभाजक के दो उदाहरण – या, अथवा।

(ग) समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं। प्रत्येक के उदाहरण इस प्रकार हैं–
(i) संयोजक – और, व, तथा आदि। (ii) विभाजक – या, अथवा, चाहे आदि।
(iii) विरोधवाचक – परन्तु, किन्तु, लेकिन आदि। (iv) परिमाणवाचक – इसीलिए, अतः आदि।

(घ) व्याधिकरण समुच्चयबोधक के चार उदाहरण – जो-तो, अर्थात्, क्योंकि, ताकि आदि।

16 विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjection Particles)

1. (क) (iv); **(ख)** (i); **(ग)** (iv)

2. (क) (iii); **(ख)** (v); **(ग)** (i); **(घ)** (ii); **(ङ)** (iv)

3. (क) अरे!; **(ख)** ठीक!; **(ग)** ओह!; **(घ)** वाह!; **(ङ)** छिः छिः!

4. (क) जो शब्द हमारे तीव्र मनोभावों (हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि) को प्रकट करते हैं, किन्तु उनका सम्बन्ध वाक्यों या वाक्य के जिस पद (शब्द) से न हो, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं।

(ख) हर्षबोधक – (i) वाह! हमारी टीम जीत गई। (ii) शाबाश! तुम कक्षा में प्रथम आए।
शोकबोधक – (i) आह! मेरी टाँग में दर्द हो रहा है। (ii) हाय! जालिम ने मार डाला।
घृणासूचक – (i) छिः छिः! कितना गन्दा आदमी है। (ii) धिक्! तुम क्या खा रहे हो?

(ग) (i) हरीश राम-राम रटता रहता है। (ii) मनु का लड़का बहुत अच्छा है। (iii) क्या तुम कल स्कूल नहीं गए? (iv) कछुआ धीरे-धीरे चल रहा है। (v) इधर हट जाओ। (vi) तुम्हारा भाई कहाँ है?

(घ) (i) इनके बाद (!) चिह्न लगाया जाता है। (ii) ये प्रायः वाक्य के प्रारम्भ में आते हैं। (iii) इनका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों से बिलकुल नहीं होता। (iv) इनके द्वारा भावों की तीव्रता प्रकट होती है।

17 कारक [Case]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓

3. **(क)** कोयल डाल पर बैठी है। **(ख)** मेरी पढ़ाई का बहुत नुकसान हो रहा है। **(ग)** अपने बालकों को सुशील बनाओ। **(घ)** उसने अपने पाँव में कुल्हाड़ी मार ली।

4. **(क)** संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उनका (संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का) वाक्य की क्रिया से सीधा सम्बन्ध जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद होते हैं– (i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक (iii) करण कारक (iv) सम्प्रदान कारक (v) अपादान कारक (vi) सम्बन्ध कारक (vii) अधिकरण कारक (viii) सम्बोधन कारक

(ग) **सम्प्रदान कारक –** जिसको कुछ दिया जाए या जिसके लिए काम किया जाए उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। इस कारक के चिह्न हैं– के लिए, को; जैसे– (i) माता बच्चों के लिए मिठाई लाई। (ii) गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में बालकों को मिठाई दी गई। इन वाक्यों में 'बच्चों के लिए' व 'बालकों को' शब्द सम्प्रदान कारक हैं।

(घ) करण का अर्थ साधन है, और साधन वह होता है जिसकी सहायता से काम किया जाता है। अतः शब्द के जिस रूप से क्रिया का साधन (सहायक) होने का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं जबकि अपादान कारक में शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध होता है अर्थात् जहाँ से कोई वस्तु अलग होती है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

18 उपसर्ग [Prefix]

1. **(क)** परि; **(ख)** अन; **(ग)** प्र; **(घ)** अव; **(ङ)** निः; **(च)** नि; **(छ)** बद; **(ज)** बे; **(झ)** स; **(ञ)** प्रति; **(ट)** प्रति; **(ठ)** अति।

2. **(क)** ना + मुराद; **(ख)** बर + खास्त; **(ग)** परा + जय; **(घ)** वि + ज्ञान; **(ङ)** सम् + कल्प; **(च)** आ + कर्षण; **(छ)** अप + यश; **(ज)** आ +गमन; **(झ)** अधि + पति; **(ञ)** अ + न्याय; **(ट)** अभि + सार; **(ठ)** उप + वन।

3. **(क)** जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे– अनुकरण – अनु + करण।

(ख) हिन्दी में उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं।

संस्कृत के उपसर्ग – अ, अति, अधि, आ, अनु आदि।

हिन्दी के उपसर्ग – अन, अध, उन्, कु, नि आदि।

विदेशी उपसर्ग – ला, हम, अल, कम, खुश आदि।

19 प्रत्यय [Suffix]

1. (ख) (ii) गुब्बारेवाला (iii) नलवाला (ग) (ii) सेवनहारा (iii) राखनहारा
   (घ) (ii) लुहार (iii) कुम्हार
2. (क) प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं जो किसी शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।
   उदाहरण – मीठा शब्द में 'आई' प्रत्यय जोड़कर 'मिठाई' शब्द बनाया गया है।
   उपसर्ग – जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। **उदाहरण –** अनुकरण = अनु + करण।
   (ख) **कृदन्त प्रत्यय –** धातुओं के अन्त में जिन प्रत्ययों के लगाने से धातु, संज्ञा व विशेषण में परिवर्तन हो जाता है, वे शब्द कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं।
   उदाहरण – 'पढ़' धातु में 'आई' शब्दांश (प्रत्यय) जोड़कर 'पढ़ाई' शब्द बनता है।
   तद्धित प्रत्यय – धातु के अतिरिक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों में जुड़कर नवीन शब्दों की रचना करने वाले शब्दों को तद्धित प्रत्यय कहा जाता है।
   उदाहरण – 'मानव' शब्द में 'ता' शब्दांश (प्रत्यय) जोड़कर 'मानवता' शब्द बनता है।
   (ग) **प्रत्यय –** प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं जो किसी शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।
   उदाहरण – 'सौभाग्य' शब्द के अन्त में 'वती' प्रत्यय जोड़ने से 'सौभाग्यवती' शब्द बनता है।
   (घ) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– (i) कृदन्त प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय
   (i) **कृदन्त प्रत्यय –** धातुओं के अन्त में जिन प्रत्ययों के लगाने से धातु, संज्ञा व विशेषण में परिवर्तन हो जाता है, वे शब्द कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे– 'पढ़' धातु में 'आई' शब्दांश (प्रत्यय) जोड़कर 'पढ़ाई' शब्द बनता है।
   (ii) **तद्धित प्रत्यय –** धातु के अतिरिक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों में जुड़कर नवीन शब्दों की रचना करने वाले शब्दों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे– 'मानव' शब्द में 'ता' शब्दांश (प्रत्यय) जोड़कर 'मानवता' शब्द बनता है।

20 लिंग [Gender]

1. (क) (iii); (ख) (ii)
2. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✓; (घ) ✗
3. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (ii)
4. (क) जोड़ा, गुस्सा, लोटा, दंगा; (ख) चढ़ाव, छिपाव, खिचाव, लगाव; (ग) चालक, गायक, बालक, लेखक
5. (क) शब्द के जिस रूप से पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, लिंग कहलाता है।

(ख) शब्दों का वह रूप जिसमें स्त्री जाति का स्पष्ट बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं जैसे– लकड़ी, बकरी, गाय आदि।

(ग) पदबोधक शब्द जैसे– राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राजदूत, मैनेजर, अध्यक्ष, डॉक्टर, मंत्री आदि पुरुष के लिए प्रयोग होने पर पुल्लिग और स्त्री के लिए प्रयोग होने पर स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

(घ) अप्राणिवाचक संज्ञाओं में लिंग-भेद जानने के निश्चित नियम नहीं हैं, फिर भी कुछ संकेत दिए जा रहे हैं–
मोटी, भारी-भरकम, बड़ी तथा बेडौल वस्तुएँ जैसे– ट्रक, कूड़ा, गट्ठर, पर्वत, जंगल, बंडल, बोरा, डिब्बा, जहाज आदि। अरबी-फ़ारसी शब्द 'खाना' और 'दान' से अंत होने वाले शब्द, संस्कृत के शब्द जिनके अन्त में 'त्र', 'ख' और 'ज' होता है, प्राणियों के समुदाय या समूह का ज्ञान कराने वाले कुछ शब्द पुल्लिग होते हैं।

21 वचन [Number]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii)
2. **(क)** एकवचन; **(ख)** बहुवचन; **(ग)** एकवचन; **(घ)** बहुवचन; **(ङ)** बहुवचन; **(च)** बहुवचन; **(छ)** बहुवचन; **(ज)** बहुवचन।
3. **(क)** संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक अथवा अनेक का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं; जैसे– लड़का, लड़के, बात, बातें आदि।

   (ख) वचन के दो भेद होते हैं– (i) एकवचन, (ii) बहुवचन

   (i) **एकवचन—**एक का बोध कराने वाले शब्द एकवचन कहलाते हैं, जैसे– लड़का, कुत्ता, नदी, कपड़ा आदि।

   (ii) **बहुवचन—**एक से अधिक का बोध कराने वाले शब्द बहुवचन कहलाते हैं; जैसे– लड़के, कुत्ते, नदियाँ, कपड़े आदि।

   (ग) वचन परिवर्तन के बहुत-से नियम जिनमें से दो नियम इस प्रकार हैं।

   (i) 'या' का 'याँ' करने से एकवचन शब्द से बहुवचन शब्द में परिवर्तित हो जाते हैं; जैसे– गुड़िया - गुड़ियाँ आदि।

   (ii) 'ई' का 'इयाँ' करने से एकवचन शब्द से बहुवचन शब्द में परिवर्तित हो जाते हैं; जैसे– गाली - गालियाँ आदि।

22 सन्धि [Combination]

1. **(क)** दीर्घ स्वर सन्धि; **(ख)** दीर्घ स्वर सन्धि; **(ग)** विसर्ग सन्धि; **(घ)** वृद्धि स्वर सन्धि; **(ङ)** गुण स्वर सन्धि।
2. **(क)** सूक्ति; **(ख)** स्वागतम्; **(ग)** न्यून; **(घ)** दास्यपराध; **(ङ)** रेखांकित

3. (क) सन्धि – दो निकटवर्ती वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार द्वारा जब वर्णों का नया रूप प्रकट होता है, तो उस मेल को सन्धि कहते हैं। **उदाहरण –** विद्या + आलय = विद्यालय

(ख) सन्धि तीन प्रकार की होती है–

(i) **स्वर सन्धि–** जब दो शब्दों के संयोग में प्रथम का अन्तिम एवं दूसरे का प्रथम वर्ण स्वर वर्ण हो, तो उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

(ii) **व्यंजन सन्धि–** जब व्यंजन वर्ण से स्वर या व्यंजन का संयोग होता है, तब उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

(iii) **विसर्ग सन्धि–** विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

(ग) स्वर सन्धि – जब दो शब्दों के संयोग से प्रथम शब्द का अन्तिम एवं दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण स्वर वर्ण हो, तो उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

उदाहरण – शिव + आलय। उसमें 'शिव' (व् + अ) का अ एवं 'आलय' का 'आ' मिलता है। दोनों स्वर हैं। अतः यह स्वर सन्धि है।

(घ) व्यंजन सन्धि – जब व्यंजन वर्ण से स्वर या व्यंजन का संयोग होता है, तो तब उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

उदाहरण – अहम् + कार = अहंकार, उत् + लास = उल्लास

(ङ) विसर्ग सन्धि – विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

उदाहरण – निः + चय = निश्चय, निः + छल = निश्छल

23 समास (Compound)

1. (क) (ii); **(ख)** (iii)

2. (क) (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iv); **(घ)** (i)

3. (क) समास – परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों के मेल को 'समास' कहते हैं।

समास के प्रकार – समास मुख्यतः छः प्रकार के होते हैं– (i) तत्पुरुष समास, (ii) कर्मधारय समास, (iii) द्विगु समास, (iv) बहुब्रीहि समास, (v) द्वन्द्व समास, (vi) अव्ययीभाव समास

(ख) समास-विग्रह – सामासिक पदों के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।

उदाहरण – देशभक्ति समस्त पद का विग्रह देश के लिए भक्ति होता है।

(ग) तत्पुरुष समास – जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो और दोनों पदों के बीच आने वाले परसर्गों (का, के, की, को, के लिए, से, में, पे, पर) का लोप हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

(घ) द्वन्द्व समास – जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और' अथवा 'या', 'एवं' लगता है, वह द्वन्द्व समास कहलाता है।

उदाहरण – सीता-राम	सीता और राम
राजा-रंक	राजा और रंक

(ङ) कर्मधारय समास में समस्त पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है; जैसे– नीलकण्ठ। नीला कण्ठ अर्थ है, न कि कोई अन्य, जबकि बहुब्रीहि समास में विशेषण-विशेष्य का सम्बन्ध नहीं होता। इस समास में शब्दार्थ गौण होता है और भिन्नार्थ प्रधान हो जाता है; जैसे– नीलकण्ठ = नीला है कण्ठ जिसका वह अर्थात् शिव।

(च) सन्धि में अक्षरों का मेल होता है किन्तु समास में शब्दों का मेल होता है।

24 शब्दकोष [Vocabulary]

1. (क) (iii); **(ख)** (iii); **(ग)** (ii)

2. (क) ✓; **(ख)** ✓; **(ग)** ✗; **(घ)** ✓; **(ङ)** ✗

3. (क) (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (i)

4. (क) सुलभ, **(ख)** परिक्रमा, **(ग)** लगातार, **(घ)** ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, **(ङ)** बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण।

5. (क) अचल; **(ख)** सुन्दर; **(ग)** जीवन; **(घ)** अनुकूल; **(ङ)** आगामी; **(च)** भलाई; **(छ)** प्रश्न; **(ज)** आकार

6. (क) संस्कृत से हिन्दी में आए ज्यों-के-त्यों शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं जबकि संस्कृत से हिन्दी में आए जिन शब्दों में किंचित परिवर्तन आ गया है, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

(ख) परस्पर विपरीत अर्थ रखने वाले शब्द विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं।

(ग) जिन बहुत-से शब्दों का अर्थ लगभग एक-सा होता है, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

(घ) उच्चारण में लगभग समान तथा अर्थ में भिन्न शब्दों को समरूप भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

(ङ) जिन शब्दों से संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाची शब्द कहते हैं; जैसे– चौराहा, सप्तऋषि आदि।

25 वाच्य [Voice]

1. (क) (iii); **(ख)** (ii)

2. (क) वाच्य – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसकी प्रधानता है, उसे वाच्य कहते हैं।

(ख) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय निम्नलिखित नियमों का उपयोग किया जाता है–

(i) कर्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' जोड़ दिया जाता है; जैसे– राम पुस्तक पढ़ता है। राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(ii) कर्म के साथ मुख्य धातु में 'आ' अथवा 'या' जोड़ दिया जाता है; जैसे– राम टीवी देखता है। राम से टीवी देखा जाता है।

(iii) क्रिया का प्रयोग कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार होता है; जैसे मोहन लीची खाता है। मोहन से लीचियाँ खाई जाती हैं।

(iv) यदि कर्म न दिया हो, तो क्रिया एकवचन पुल्लिंग होती है, जैसे– मोहन दौड़ता है। मोहन से दौड़ा जाता है।

(ग) **कर्मवाच्य –** कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता रहती है और क्रिया की लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है।

उदाहरण – बालकों द्वारा फुटबॉल खेला जा रहा है। खेती किसान द्वारा की जा रही है।

भाववाच्य – वाक्य के जिस स्वरूप में कर्ता और कर्म को प्रधानता न मिलकर भाव को प्रधानता मिलती है, उसे भाववाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया भाव के अनुसार प्रयुक्त होती है।

उदाहरण – बच्चे से पैदल नहीं चला जाता। लड़कों से चुपचाप नहीं बैठा जाता।

26 पद–परिचय [Parsing]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)

2. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iv); **(घ)** (i)।

3. **(क)** भीतर - स्थानवाचक सम्बन्धबोधक, जाकर - प्रेरणार्थक क्रिया; बैठिए — आज्ञार्थक क्रिया।

(ख) बेशक, परन्तु — विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय; वह — संकेतवाचक सर्वनाम; धनवान — गुणवाचक विशेषण; कंजूस — गुणवाचक विशेषण।

(ग) मैं — उत्तम पुरुष, सर्वनाम; अभी — समयवाचक क्रिया-विशेषण; सोकर — प्रेरणार्थक क्रिया; उठा हूँ — मुख्य क्रिया।

(घ) उसका — प्रथम पुरुषवाचक, सर्वनाम; साथ — स्थानवाचक क्रिया-विशेषण; छोड़ दीजिए — आज्ञार्थक क्रिया

4. **(क)** **पद-परिचय –** वाक्य में व्याकरण की दृष्टि से प्रत्येक पद का पूर्ण परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है।

(ख) **संज्ञा –** भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया तथा अन्य पदों से सम्बन्ध।

सर्वनाम – भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया तथा अन्य पदों में सम्बन्ध।

विशेषण – भेद, वाच्य-प्रयोग, काल, अवस्था, विधि या प्रकार तथा अन्य पदों में सम्बन्ध।

क्रिया-विशेषण – भेद, विशेष्य, क्रिया, विकार तथा अन्य पदों में सम्बन्ध।

(ग) **पद परिचय की उपयोगिता –** पद परिचय से वाक्य के प्रत्येक पद का ज्ञान हो जाता है कि वह व्याकरण की किस विधि से सम्बन्धित है।

27 विराम–चिह्न [Punctuation]

1. **(क)** (ii); **(ख)** (iii); **(ग)** (i)

2. **(क)** ✗; **(ख)** ✓; **(ग)** ✓; **(घ)** ✗

3. **(क)** (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (ii); **(घ)** (v); **(ङ)** (i)

4. **(क)** प्रश्नवाचक चिह्न; **(ख)** अवतरण चिह्न; **(ग)** योजक चिह्न; **(घ)** कोष्ठक चिह्न; **(ङ)** अर्धविराम चिह्न; **(च)** अल्प विराम चिह्न; **(छ)** विस्मयसूचक विराम चिह्न; **(ज)** अपूर्ण विराम चिह्न

5. **(क)** **पूर्ण विराम –** एक बात पूरी हो जाने पर अर्थात् वाक्य समाप्त होने पर पूर्ण विराम (।) लगाया जाता है। **उदाहरण –** निखिल मीठा दूध पी चुका है।

   (ख) **योजक –** द्वन्द्व समास वाले शब्दों में योजक (-) लगाया जाता है। **उदाहरण –** माता-पिता, राम-लक्ष्मण।

   अवतरण चिह्न – वक्ता के कथन को ज्यों-का-त्यों दर्शाने के लिए अवतरण चिह्न ("....") लगाया जाता है।

   उदाहरण – गाँधीजी ने कहा, "सत्य और अहिंसा से शत्रु को भी जीता जा सकता है।"

   (ग) अवतरण चिह्न का प्रयोग कथन को ज्यों-का-त्यों दर्शाने के लिए किया जाता है।
   तीन उदाहरण निम्नलिखित हैं–
   (i) सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
   (ii) बाल गंगाधर तिलक ने कहा था, "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"
   (iii) अध्यापकजी ने छात्रों से कहा, "कल मैं अंग्रेजी नहीं पढ़ाऊँगा।"

   (घ) **विराम चिह्नों की उपयोगिता –** भाषा में विचारों तथा भावों को स्पष्टतः समझने तथा भाषा प्रवाह को सन्तुलित करने के लिए विराम-चिह्न उपयोगी हैं।

   (ङ) **अर्द्ध विराम –** वाक्य में आधी बात पूरी हो जाने पर अर्द्ध विराम (;) लगाया जाता है।
   अल्प विराम – वाक्य के कुछ समान शब्दों को अलग करने के लिए अल्प विराम (,) लगाया जाता है।

28 मुहावरे [Idioms]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (iii); **(ग)** (iv)

2. **(क)** रीति के विरुद्ध कार्य करना; **(ख)** पोल खुलना; **(ग)** कठिन परिश्रम करना; **(घ)** निश्चित होना; **(ङ)** भाग जाना।

3. **(क)** भाषा में कुछ ऐसे वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता है, जिनका एक विशेष अर्थ लिया जाता है। इन वाक्यांशों को पूर्ण क्रिया के स्थान पर प्रयोग किया जाता है; अतः ऐसे वाक्यांशों को मुहावरे कहा जाता है।
   'अन्त पाना' वाक्यांश का अर्थ (किसी का) आखिर पाना है, किन्तु यह एक मुहावरा है और इसका अर्थ भेद पाना है।

   (ख) भाषा में मुहावरों का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। संसार की लगभग सभी भाषाओं में अपने-अपने अलग-अलग मुहावरे होते हैं; जिनका इन भाषाओं में खूब प्रयोग किया जाता है। हिन्दी भाषा में इनका प्रयोग अत्यधिक मात्रा में किया जाता है। इसके प्रयोग से भाषा में रोचकता उत्पन्न होती है तथा किसी बात को अधिक प्रभावशाली ढंग से कहा जाता है।

29 अलंकार [Figures of Speech]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (iii)

2. **(क)** उपमा, **(ख)** यमक

3. **(क)** यमक अलंकार में कोई शब्द एक से अधिक बार आता है और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न होता है, जबकि श्लेष अलंकार में कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ देता है।

(ख) उपमा के चार अंग होते हैं– **(i)** उपमेय **(ii)** उपमान **(iii)** वाचक शब्द **(iv)** साधारण धर्म।

उदाहरण– 'हरिपद कोमल कमल-से' में उपमेय-हरिपद, उपमान-कमल, वाचक शब्द-से तथा साधारण धर्म-कोमल है।

(ग) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं। दूसरे शब्दों में भाषा की शोभा को बढ़ाने के लिए प्रयुक्त शब्द और अर्थ के चमत्कार को अलंकार कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं–

(i) शब्दालंकार **(ii)** अर्थालंकार

(घ) **अनुप्रास अलंकार –** जहाँ पर कोई वर्ण (अक्षर) एक से अधिक बार आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे– रघुपति राघव राजा राम।

उपमा अलंकार – जहाँ किसी एक वस्तु की किसी दूसरी प्रसिद्ध वस्तु से गुण, धर्म और स्वरूप के कारण समानता बताई जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है; जैसे– हरिपद कोमल कमल से।

30 रस [Ras]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)

2. **(क)** वीर रस; **(ख)** भक्ति रस

3. **(क)** किसी काव्य को पढ़ने, सुनने अथवा अभिनय को देखने का पाठक, श्रोता या दर्शक को विभाव आदि के संयोग से जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे रस कहते हैं।

(ख) **वीर रस –** शत्रु के उत्कर्ष को मिटाने, मित्रों की दुर्दशा देख उनका उद्धार करने और धर्म का उद्धार करने आदि में जो उत्साह कर्म-क्षेत्र में प्रवृत्त करता है, वह वीर रस कहलाता है;

जैसे– मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा जानो मुझे।

करुण रस – प्रिय वस्तु या व्यक्ति के नाश या अनिष्ठ से हृदय में उत्पन्न क्षोभ को करुण रस कहते हैं; जैसे– मणि खोए भुजंग सी जननी, फन सा फटक रही थी शीश।
अंधी आज बनाकर मुझको, किया न्याय तुमने जगदीश।

(ग) स्त्री-पुरुष के पारस्परिक प्रेम (मिलन या विरह) के वर्णन से हृदय में उत्पन्न होने वाले आनन्द को शृंगार रस कहते हैं। यह रसों का राजा कहलाता है। इसका स्थायी भाव रति है।

शृंगार रस दो प्रकार का होता है–

(i) संयोग शृंगार (ii) वियोग शृंगार

(i) संयोग श्रृंगार रस – जहाँ नायक-नायिका के विविध प्रेमपूर्ण कार्यों, मिलन, वार्तालाप, स्पर्श आदि का वर्णन होता है वहाँ संयोग श्रृंगार रस होता है।

उदाहरण – बतरस लालच लाल की मुरी धरी लुकाइ।
सौह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नट जाइ।।

(ii) वियोग श्रृंगार रस – प्रबल प्रेम होते हुए भी जहाँ नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो, वहाँ वियोग श्रृंगार रस होता है।

उदाहरण – ब्रज के विरही लोग दुखारे।
बिनु गोपाल ठगे से ठाढ़े, अति दुर्बल तन कारे।
नन्द जसोदा मारग जोवति, निसिदिन साँझ सकारे।
चहुँ दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत, अँसुवन बहत पनारे।

31 छन्द [Metre]

1. (क) (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (iii)

2. सुमेल कीजिए–
(क) (iii); **(ख)** (iv); **(ग)** (v); **(घ)** (ii); **(ङ)** (i)

3. (क) सोरठा, **(ख)** चौपाई, **(ग)** दोहा

4. (क) मात्रा, वर्ण, गति (लय), यति (विराम) तथा तुक आदि के नियमों का विचार रखकर लिखी गई पंक्तियों को छन्द कहते हैं। छन्द ज्ञान के लिए निम्नलिखित बातों की जानकारी होनी चाहिए– वर्ण, मात्रा, गति (लय), यति (विराम), तुक, चरण आदि।

(ख) दोहा – दोहा छन्द में चार चरण होते हैं। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में लघु वर्ण होता है।

उदाहरण – गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

चौपाई – चौपाई छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। अन्त में दो गुरू (ऽऽ) शुभ माने जाते हैं।

मुनि पद कमल बँदि दोउ भ्राता, चले लोक लोचन सुखदाता।
बालक वृन्द देखि अति शोभा, लगे संग लोचन मनु लोभा।।

(ग) दोहा छन्द में चार चरण होते हैं। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में लघु वर्ण होता है, जबकि सोरठा दोहे का उलटा होता है। इसके प्रथम एवं तृतीया चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में लघु वर्ण होता है।

चरणों के अन्त में लघु वर्ण होता है।

32 अनुच्छेद-लेखन [Paragraph Writing]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii)

2. **(क)** एक छोटी रचना जिसमें विषय को सटीक रूप में प्रस्तुत किया जाता है और निजी विचारों को मूर्त रूप दिया जाता है, परन्तु घटनाओं का आकलन उसमें नहीं होता है, अनुच्छेद लेखन कहलाता है।

(ख) अनुच्छेद लिखते समय साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। इसे लिखते समय विदेशी भाषा का हिन्दीकरण सटीकता से करना चाहिए और दुरूह और क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। यह लिखते समय शुरू से अन्त तक एक ही पैराग्राफ होना चाहिए।

33 पत्र-लेखन [Letter Writing]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (iii)

2\. **(क)** पत्र मन के विचारों को प्रकट करने का सर्वोत्तम तथा लिखित रूप है।

(ख) पत्र प्रारम्भ करने से पहले पत्र के बाईं ओर सबसे ऊपर, जिसको पत्र लिखा जा रहा है, उसके लिए सम्बन्ध के अनुसार सम्बोधन का प्रयोग करना चाहिए।

(ग) पत्र पर सबसे ऊपर पता डालना चाहिए। पते में पाने वाले का नाम, कार्यालय का नाम या भवन, गली, मोहल्ले और नगर का नाम, पोस्ट ऑफिस, जिले व प्रदेश का नाम और पिन कोड नम्बर स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।

34 निबन्ध-लेखन [Essay Writing]

1. **(क)** (iii); **(ख)** (ii); **(ग)** (i)

2. **(क)** अच्छी प्रकार से बंधी गद्य रचना को निबन्ध कहते हैं।

(ख) निबन्ध लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें

(i) विषय से सम्बन्धित जानकारी विभिन्न स्रोतों से प्राप्त कर ली जाए।

(ii) जानकारी प्राप्त करने के लिए उस विषय पर लिखे गए अन्य निबन्ध पढ़कर उपयोगी सामग्री नोट कर ली जाए।

(iii) विद्वान व्यक्तियों और अपने अध्यापक के साथ विषय पर वार्तालाप किया जाए तथा विषय सामग्री का संकलन और चयन किया जाए।

(iv) विषय के सम्बन्ध में अपने निजी अनुभवों का उल्लेख किया जाए।

3. छात्र स्वयं करें।